



भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारत मौसम विज्ञान विभाग

संस्करण - 9

वर्ष - 2022

किरणें

भारत मौसम विज्ञान विभाग
जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएँ कार्यालय
शिवाजीनगर, पुणे - 411 005

किरणें
भारत मौसम विज्ञान विभाग
विभागीय हिंदी पत्रिका

प्रमुख संरक्षक

डॉ. मृत्युंजय महापात्र
मौसम विज्ञान के महानिदेशक

संरक्षक

श्री के.एस.होसालिकर
वैज्ञानिक -'जी' तथा प्रमुख जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएँ

संपादक मंडल

डॉ. आशुतोष मिश्रा, वैज्ञानिक -'डी'
श्री रंजन फुकन, वैज्ञानिक -'सी'
श्री अश्विनी प्रसाद, वैज्ञानिक सहायक
श्रीमती अपर्णा खेडकर, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
प्रमोद पारखे, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मुद्रण समिति

श्री जयेश शाह, वैज्ञानिक सहायक
श्री शरद गुरसाले, वैज्ञानिक सहायक

मुद्रक

विभागीय मुद्रणालय, पुणे

विशेष आभार

डॉ. अनुपम काश्यपि, वैज्ञानिक -'एफ'

('किरणों' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकार के हैं । भारत मौसम विज्ञान विभाग का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)

डॉ. मृत्युंजय महापात्र

मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक,
विश्व मौसम विज्ञान संगठन में भारत के स्थाई प्रतिनिधि
एवं कार्यकारी परिषद के सदस्य

Dr. Mrutyunjay Mohapatra

Director General of Meteorology,
Permanent Representative of India with WMO,
Member of Executive Council, WMO



भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड़
नई दिल्ली-110003
Government of India
Ministry of Earth Sciences
India Meteorological Department
Mausam Bhawan, Lodi Road
New Delhi - 110003



महानिदेशक की कलम से

हिंदी दिवस के पावन अवसर पर जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं कार्यालय- पुणे, भारत मौसम विज्ञान विभाग की हिंदी गृह पत्रिका 'किरणें' का नौवाँ संस्करण आपको सौंपते हुए मैं अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

माननीय पृथ्वी विज्ञान मंत्री जी द्वारा अनुमोदित 7 सूत्री चार्टर के अनुपालन हेतु पुणे कार्यालय में हिंदी तथा हिंदीतर भाषी कार्मिकों को प्रादेशिक भाषा मराठी सिखाने के लिए नियमित रूप से कक्षाएं आयोजित की गईं और प्रशिक्षणार्थियों का मराठी भाषा प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। मराठी सीखने वाले सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं, साथ ही प्रशिक्षण देने वाले अधिकारियों को भी बहुत-बहुत बधाई।

जैसा कि आप सभी को विदित है कि देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। इस महोत्सव के अंतर्गत कार्यालय द्वारा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, छात्रों, किसानों और आम जनता के बीच जाकर उन्हें मौसम के विषय में जानकारी देकर "जन जन तक पृथ्वी विज्ञान - जन जन की भागीदारी" स्लोगन को सार्थक किया है। हमारे कार्मिकों ने इन सभी गतिविधियों के लिए समय निकाल कर अपने दायित्वों का निर्वहन किया है जिसके लिए सभी आयोजनकर्ता भी बधाई के पात्र हैं।

प्रस्तुत अंक में साहित्यिक, तकनीकी विषयों के साथ-साथ सामान्य विषयों को हिंदी तथा प्रादेशिक भाषा में भी संकलित करके नई प्रेरणा तथा नव ऊर्जा का संचार किया गया है जो निश्चित ही सराहनीय है।

मैं आशा करता हूँ कि गृह पत्रिका "किरणें" निरंतर उत्कृष्टता की ओर बढ़ेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(मृत्युंजय महापात्र)



संदेश

जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं कार्यालय, पुणे की हिंदी गृह पत्रिका 'किरणें' का नौवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि पिछले अंकों की भांति इस अंक में भी हमारे कार्यालय के कार्मिकों ने अपनी प्रतिभा और लेखनी से कमाल किया है।

मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिका में प्रकाशन हेतु पुणे कार्यालय के कार्मिकों द्वारा हिंदी, मराठी और असमिया भाषा में रचनाएं भेजी गईं। इसके अलावा, हिंदी और हिंदीतर भाषी कार्मिकों को प्रादेशिक भाषा 'मराठी' सिखाने का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया गया जिसके लिए प्रशिक्षण देने वाले तथा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

यह वर्ष इस दृष्टिकोण से भी विशेष रहा है कि माननीय मंत्री, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा अनुमोदित 7 सूत्री चार्टर के अनुपालन में हमारे पुणे कार्यालय में अनेक उपलब्धियां अर्जित की गईं तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का यथासंभव प्रयत्न किया गया। मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि 'आजादी का अमृत महोत्सव' श्रृंखला में आयोजित कार्यक्रमों में हमारा कार्यालय अग्रणी रहा है। इस वर्ष कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अनेकों सामाजिक संस्थाओं तथा स्कूलों में जाकर मौसम और विभिन्न क्षेत्रों में इसके अनुप्रयोग की जानकारी हिंदी तथा मराठी भाषा में दी गई जो एक सराहनीय पहल है।

हिंदी का प्रकाश फैलाने वाली यह ज्ञानरूपी गृह पत्रिका 'किरणें' आकाश तक उड़ान भरे, इसी शुभकामना के साथ मैं पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

के.एस.होसालिकर

संपादकीय

भारत मौसम विज्ञान विभाग, प्रमुख जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं का कार्यालय, पुणे की यह गृह पत्रिका 'किरणें' का नौवाँ संस्करण आपको समर्पित करते हुए असीमित हर्ष की अनुभूति हो रही है। जिस गति से पुणे के कार्मिकों में हिंदी के प्रति उत्साह और साहित्य सृजन की किरणें फैल रही हैं, वह दिन दूर नहीं, जब हमारी गृह पत्रिका 'किरणें' सूर्य की किरणों की भांति हर ओर अपना प्रकाश फैलाएगी और विभाग और देश को गौरवान्वित करेगी। यह विभाग मौसम से जुड़े वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों के अलावा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का दायित्व भी भली-भांति निभा रहा है।

प्रस्तुत अंक में चारों दिशाओं से आए पवन के मंद मंद झोंकों ने एक ताजगी भरा एहसास दिलाया है। जहां एक ओर वैज्ञानिक लेख 'अंडमान और निकोबार के लिए मानसून की घोषणा कैसे करते हैं' में अत्यंत सरलता से मानसून की गतिविधियों के विषय में समझाया गया है, वहीं दूसरी ओर एक कविता में संघर्ष और दृढ़ता के बारे में बताया गया है। साथ ही 'अंतरिक्ष मलबा' क्या होता है और उससे होने वाले खतरों के बारे में बताया गया है।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के माननीय मंत्री महोदय द्वारा अनुमोदित सात सूत्रा चार्टर के प्रभाव अंतर्गत इस वर्ष मराठी भाषा में भी रचनाएं आमंत्रित की गई थी। परंतु केवल दो ही रचनाएं एक लेख 'महाराष्ट्र की संगीत परंपरा' और एक कविता 'आहुती' प्रकाशनार्थ प्राप्त हुईं। आशा है भविष्य में मराठी की 'किरणें' भी और अधिक प्रकाशमान होगी।

विविध प्रकार के मोतियों को पिरोती हुई हमारी पत्रिका 'किरणें' आपके सम्मुख प्रस्तुत है। आपके बहुमूल्य सुझाव इस पत्रिका को और बेहतर बनाने में मील का पत्थर साबित होंगे।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख / कविता का शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	अंतरिक्षा मलबा	9
2.	आधुनिकता	12
3.	कृषि और कृषक	13
4.	कृष्ण की महिमा	16
5.	गुरुवायूर में एक दिन	17
6.	उसके नाम की थी	19
7.	नगर वन योजना- एक कदम हरियाली की ओर	20
8.	अलविदा मेरे दोस्त...	24
9.	प्रभाव आधारित बारिश का पूर्वानुमान	25
10.	प्रवासी पक्षी	29
11.	मेरी विदेश यात्रा	31
12.	मौनं सर्वार्थ साधनम्	34
13.	लड़ना जरूरी है	35
14.	सचेत जीवन - एक कला	36
15.	बारिश का पूर्वानुमान	41
16.	अंडमान और निकोबार के लिए मानसून की घोषणा	42
17.	सोशल मीडिया के प्रभाव	45
18.	हमारे भारत के गांवों के अद्भूत, अनोखे तथ्य	50
19.	अर्थ भिन्न - लिपि समान	52
20.	आहुती	56
21.	महाराष्ट्राची संगीत परंपरा	57
22.	हिंदी पखवाड़ा वर्ष 2021 की रिपोर्ट	61
23.	आज़ादी का अमृत महोत्सव की रिपोर्ट	65

अंतरिक्ष मलबा

सुश्री आराधना कुमारी, वैज्ञानिक सहायक
जलवायु निगरानी, विश्लेषण एवं प्रागुक्ति समूह

पृथ्वी और अंतरिक्ष की सीमा को वैज्ञानिक कारमन रेखा (Karman Line) कहते हैं। वैसे तो यह रेखा ना होकर "क" क्षेत्र है, जो हवाई यात्रा और अंतरिक्ष यात्रा के बीच की सीमा को निर्धारित करती है। 1957 में एक हंगरी-अमेरिकी वैज्ञानिक ने इस रेखा को परिभाषित करने का प्रयास किया था, जिनका नाम थियोडोर वॉन कारमन (Theodore Von Karman) था। उन्हीं के नाम पर इस रेखा का नाम कारमान रेखा रखा गया है।

सामान्यतः कारमन रेखा पृथ्वी के समुद्र स्तर से 100 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह स्थान मध्यमंडल (Mesosphere) का अंत भी कहलाता है। माना जाता है कि इसके बाद अंतरिक्ष की शुरुआत हो जाती है।



अंतरिक्ष मलबा क्या होता है ?

अंतरिक्ष मलबा जिसे space debris or space junk के नाम से भी जाना जाता है, अंतरिक्ष में कुछ ऐसे अवशेष हैं जो अंतरिक्ष में तो मौजूद हैं लेकिन किसी काम के नहीं रहे, जो नष्ट या टूट चुके हैं और अनियंत्रित रूप से गुरुत्वाकर्षण बल के कारण बड़ी तेजी से घूम रहे हैं।



मलबा जमा होने के कारण

अंतरिक्ष मलबा जमा होने के दो कारण होते हैं - पहला प्राकृतिक एवं दूसरा अप्राकृतिक या मानवीय कारण। प्राकृतिक अंतरिक्ष मलबा सौर मंडल के खगोलीय पिंड जैसे क्षुद्रग्रह (asteroids), धूमकेतु (comets) और उल्कापिंड (meteorites) के कारण होता है जबकि मानवीय अंतरिक्ष मलबा रॉकेट के अवशेष, उपग्रह जो अब काम के योग्य न बचें हों या कोई स्पेस स्टेशन जो नष्ट हो चुका हो आदि से होता है।

अंतरिक्ष मलबे से खतरा

- पिछले 60-70 वर्षों में अनेकों अंतरिक्ष अन्वेषण हुए हैं। दुनिया के ताकतवर देश अंतरिक्ष में अपना दबदबा कायम करने की होड़ में लगे हुए हैं जिसके चलते अंतरिक्ष मलबे में वृद्धि होती जा रही है जो पृथ्वी के लिए काफी नुकसानदायक हो सकती है। अधिकांश मलबे भूमध्य रेखा के ऊपर भूगर्भीय कक्षा में पाया जाता है। इस कचरे का छोटा सा हिस्सा भी किसी संचार नेटवर्क को नुकसान पहुंचाने के लिए पर्याप्त है।
- नासा का अनुमान है कि रोजाना करीब एक मलबा या तो पृथ्वी पर गिरता है या फिर वातावरण में आते ही जल जाता है। चूँकि धरती का करीब 70 फीसदी हिस्सा पानी का है इसलिए ज्यादातर कचरा भी इन्हीं क्षेत्रों में आकर गिरता है।
- ज्यादातर मलबा पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करते ही जलकर नष्ट हो जाता है, लेकिन अगर कोई बड़ा टुकड़ा पूरी तरह नष्ट ना हो और हमारे वायुमंडल में प्रवेश कर ले, तो उससे विनाशक प्रभाव उत्पन्न हो सकते हैं। इसी साल जुलाई 2022 में चीन का क अनियंत्रित लॉन्ग मार्च 5बी रॉकेट हिंद महासागर में गिर गया। विगत वर्षों में ऐसी घटनाएं कई बार हो चुकी हैं। संयोग है कि यह भू-भाग पर नहीं गिरा अन्यथा भारी नुकसान हो सकता था।

वर्तमान स्थिति

- 1 जनवरी 2022 तक के आंकड़ों के अनुसार, अंतरिक्ष में कुल 4852 क्रियाशील उपग्रह हैं। अंतरिक्ष में मौजूद मलबा लगभग 25,265 कि.मी. प्रति घंटा की गति से घूम रहा है जो उपग्रहों, रॉकेट, स्पेस स्टेशन को भारी क्षति पहुँचा सकते हैं।
- संयुक्त राज्य स्पेस सर्विलांस नेटवर्क के अनुसार, अंतरिक्ष में लगभग 10 सेंटीमीटर से बड़े 23000, एक सेंटीमीटर से बड़े 5,00,000 तथा एक किलोमीटर से बड़े 100,00,000 अंतरिक्ष मलबे बिखरे पड़े हैं।

अंतरिक्ष मलबे से बचने के लिए उठाये जा रहे कदम

- यूरोपिय स्पेस एजेंसी (ESA) ने स्पेन में इजाना-1 नाम का लेजर रेंजिंग स्टेशन (Laser Ranging Station) शुरू किया है जो सैटेलाइट गतिविधियों पर नजर रखने के साथ अंतरिक्ष का कचरा भी बाहर करने में मदद कर सकेगा।

- एस्ट्रोस्केल नाम की एक जपानी कंपनी ने एक ऐसा सैटेलाइट लॉन्च किया है जो बंद या खराब हो चुके उपग्रहों और उसके अवशेषों का पता लगाएगा और पृथ्वी पर वापस लाकर उन्हें नष्ट कराएगा ।
- जापान ने स्पेस का कचरा कम करने के लिए लकड़ी के सैटेलाइट पर काम शुरू कर दिया है, रिसर्च की जा रही है कि कैसे लकड़ी का इस्तेमाल अंतरिक्ष में किया जा सकता है ।
- यूरोपीय स्पेस एजेंसी ने अंतरिक्ष कचरा साफ करने के लिए साल 2025 में क्लियरस्पेस 1 मिशन लॉन्च करने की योजना बनाई है । यूरोपीय स्पेस एजेंसी का ईडीऑर्बिट मिशन जो साल 2014 में सबसे पहले प्रस्तावित किया गया था, इनका लक्ष्य 800 से 1000 किलोमीटर की ऊंचाई का कचरा पकड़ना है ।
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)द्वारा प्रोजेक्ट नेत्र शुरू किया गया है जो भारतीय उपग्रहों को मलबे और अन्य खतरों से सुरक्षित रखने के लिए अंतरिक्ष में एक प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (Early Warning System)है ।
- इन सबके अलावा और भी कई विचारों पर काम चल रहा है । अमेरिकी एयरफोर्स ने लेजर के उपयोग का प्रस्ताव दिया है तो नासा (NASA)के वैज्ञानिकों ने एक खास तरह के सैटेलाइट का सुझाव दिया है जिसमें पानी के जहाज की तरह के पाल (Sails) हो और वे कचरे को पृथ्वी के वायुमंडल में पहुँचाएं ।

संदर्भ

https://www.nasa.gov/mission_pages/station/news/orbital_debris.html

<https://www.nationalgeographic.com/science/article/space-junk>

<https://esoc.esa.int/content/esa%E2%80%99s-iza%C3%B1a-1-laser-ranging-station-satellite-debris-tracking>

<https://hindi.news18.com/photogallery/knowledge/karman-line-that-decides-end-of-earth-and-beginning-of-space-viks-4235385-page-3.html>

<https://hindi.newsgram.com/international-news/karman-line-tells-where-does-space-begin>

<https://www.statista.com/statistics/264472/number-of-satellites-in-orbit-by-operating-country/#:~:text=Of%20the%204%2C852%20active%20artificial,China%2C%20accounting%20for%20only%20499.&text=Artificial%20satellites%20are%20human%2Dmade%20objects%20deliberately%20placed%20in%20orbit>

“राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है”

॥ आधुनिकता ॥

श्री रोहिदास बोराडे, एमटीएस
प्रशासन समूह

ऑन लाइन हो गया है रे जमाना,
कितना गजब का है यह अफसाना ।
बच्चों की पढ़ाई भी हो गई गज़ब,
गुगल देखकर उत्तर देते हैं अजब ।
सोशल मीडिया है हर तरफ छा गया,
इंसान भी बेचारा इसके काबू में आ गया ।
संताने भी पाश्चात्य सभ्यता के आ गयी करीब,
इंस्टा पे वीडियोबना रही अजीब ।
हरे राम हरे कृष्णा की जगह सरमा गई के प्रश्न पुछे जा रहे हैं,
हेयर स्टाइल से खाने तक के व्यंजन इंस्टा की टेबल पर लगाए जा रहे हैं ।
आलू-गोभी, दाल-चावल न किसी को भाए,
पिज्जा-बर्गर, मोमोज, मैगी बच्चों के चेहरे की रोनक बढाए ।
लस्सी और चाय कहां पसंद आ रही है,
एनर्जी ड्रिंक तबाही मचा रही है ।
मोबाइल पर उत्सव मनाए जा रहे हैं,
शिकवे ऑनलाइन मिटाए जा रहे हैं ।
साड़ी पल्लू वाली बहु भी जीन्स में आ रही है,
भावनाएं भी वीडियो कॉलिंग पर दिखाई जा रही है ।
दर्जियों के भी मजा आ रहे हैं
पूरे पैसे लेकर कपड़ा बचा रहे हैं ।
तीसरी लहर का बेसब्री से इंतजार हो रहा है,
वैक्सीनेशन का हर तरफ बवाल हो रहा है ।
मेरी ये कविता सुनकर हैरान मत होना,
सच लगे बातें तो परेशान मत होना ।
आप सभी को सुनानी थी एक कविता,
तो मैंने सुनादी ये आधुनिक विचारों की गीता ।

कृषि और कृषक

श्रीमती चंदना करमाकर, मौ.वि. - ए
कृषि मौसम विज्ञान समूह

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश में 1960 के दशक के दौरान कृषि क्षेत्र में उन्नति के लिए व्यापक स्तर पर कार्यक्रमों की शुरुआत की गई। कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान के लिए कई कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। कृषि क्षेत्र में नए-नए वैज्ञानिक तरीकों के उपयोग से देश में हरित क्रांति अभियान सफल हुआ। किसानों के अथक प्रयास से देश में गेहूँ का उत्पादन वर्ष, 1967-68 के दौरान दो गुना से भी अधिक हो गया। कृषि के क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण प्रगति ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने का रास्ता दिखाया। इसी दशक के खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ अन्य फसलों के उत्पादन को बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया। कृषि वैज्ञानिकों ने भी विशेष रूप से इस क्षेत्र में अपना योगदान दिया।

भारत में भौगोलिक स्थितियों के कारण कृषि भी विविधतापूर्ण है। हमारे देश में अलग-अलग जलवायु तथा विभिन्न प्रकार की मृदाओं के कारण अनेक प्रकार के अनाज, फसल, सब्जियाँ और फलों का उत्पादन किया जा सकता है। मौसमी विविधता को ध्यान में रखते हुए, तकनीकी तरक्की एवं वैज्ञानिक शोध द्वारा कई प्रकार के फसलों का उत्पादन भारत में होता है।

विश्व की कुल उपलब्ध भूमि का लगभग एक तिहाई हिस्सा कृषि में उपयोग किया जाता है। कृषि का अस्तित्व और इसकी स्थिरता सीधे पर्यावरण पर निर्भर करती है। पोषक तत्व, जल की उपलब्धता, पौधे व जीव जंतुओं में निहित जैविक विविधता और पर्यावरणीय दशा सभी कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पारंपरिक कृषि प्रणाली में कई प्रकार के सुधार लाए गए हैं, परंतु कृषि को प्रभावित करने वाली प्रमुख चुनौतियों में जलवायु परिवर्तन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेषतः, तापमान एवं वर्षा की तीव्रता में परिवर्तन इत्यादि कृषि पर हानिकारक प्रभाव को बढ़ाते हैं। जलवायु परिवर्तन जैसी बड़ी चुनौती को झेलता है - कृषक या साधारण शब्दों में कहा जाए तो हमारे किसान भाई।

एकमात्र जलवायु परिवर्तन किसानों की समस्या नहीं है बल्कि भारतीय किसानों की कई अन्य समस्याएं भी हैं जैसे-

1. कृषि भूमि पर हक का विवाद
2. फसल का सही मूल्य न मिलना
3. अच्छे गुणता के बीज का अधिकतर किसानों तक न पहुँचना
4. अच्छी सिंचाई व्यवस्था का उपलब्ध न होना
5. आधुनिक उपकरणों का अभाव
6. भंडारघर की सुविधा का अभाव
7. अच्छे परिवहन सुविधा का अभाव

भारत में किसानों को तीन श्रेणी में रखा गया है - 1. सीमांत किसान, 2. लघु किसान और 3. बृहद किसान

सीमांत किसान वे किसान हैं जिनके पास खेती लायक एक हेक्टर यानी करीब ढाई एकड़ भूमि होती है। लघु किसान वे किसान होते हैं जिनके पास खेती योग्य भूमि एक हेक्टर से ज्यादा परंतु दो हेक्टर से कम होती है। बृहद किसानों को जमीनदार के नाम से भी जाना जाता है। इन किसानों के पास दस हेक्टर या उससे अधिक जमीन कृषि योग्य होती है।

अधिकांश किसानों के पास खेती की जमीन सीमित होती है, इसी कारण उन्हें पारंपरिक तरीकों को अपनाकर ही खेती करनी पड़ती है और यही वजह है कि उनका उत्पादन सीमित है। उत्पादन बढ़ाने के लिए जिन संसाधनों की जरूरत है उनके लिए इन किसानों को बैंकों से ऋण लेना पड़ता है। मौसमी आपदाओं के कारण अगर फसल खराब हो जाती है तो ऐसे किसान काफी बार ऋण न चुका पाने के डर से आत्महत्या भी कर लेते हैं।

भारत सरकार अपनी ओर से किसानों के विकास के लिए कई कदम लेती रही है जैसे कृषि ऋण माफी योजना। कृषि ऋण किसानों द्वारा कृषि के लिए आवश्यक संसाधनों को प्राप्त करने के लिए बैंकों से लिया गया ऋण है। कृषि ऋण माफी योजना के अंतर्गत केंद्र या राज्य सरकारें किसानों की ओर से बैंकों का ऋण चुकाती है। राष्ट्रव्यापी कृषि ऋण माफी योजना की शुरुआत 1990 में हुई थी।

भारत सरकार ने 2020 साल में किसान उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) अर्थात् फार्मस प्रोड्यूस एण्ड कॉमर्स अध्यादेश पारित किया। यह अध्यादेश 'एक भारत, एक कृषि बाजार' की परिकल्पना से पारित किया गया। इस बिल के तहत इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग के प्रावधानों से अंतर राज्य व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। यह अध्यादेश कृषि बाजार में क्षेत्रिय असमानताओं और मूल्य स्थिरता के मुद्दे को ध्यान में रखकर पारित किया गया है।

कई ऐसे किसान भी हैं जो दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं। इन किसानों ने जहां चाह है वहाँ राह है - यह मंत्र अपनाया है। वैसे तो इन किसानों की गिनती काफी लंबी है, उनमें से कुछ हैं:

1. पंजाब से श्री सुखदेव सिंह, 2. कर्नाटक से श्री मुत्तप्पा पुजारी, 3. असम से श्रीमती सुचित्रा राँय, 4. मिजोरम से श्रीमती पी.सी. लालरिनलियानी

श्री सुखदेव सिंह पंजाब से हैं। उन्होंने केवल मैट्रिक तक पढ़ाई की है। उन्हें खेत विरासत में मिली परंतु वह जमीन का टुकड़ा बंजर था और सिंचाई की सुविधा भी उपलब्ध नहीं थी। भूमि सुधार कार्यक्रम के तहत, उन्होंने जिप्सम का उपयोग से मिट्टी की उर्वरता में काफी सुधार देखा। मिट्टी में उर्वरता के सुधार के साथ उन्होंने फसल जैसे गन्ना, आलू, सरसों और मक्का आदि की खेती की। धीरे-धीरे कड़ी मेहनत से उनकी कृषि में आय काफी बढ़ी। अब वे 74 एकड़ भूमि पर खेती करते हैं और विविध फसलें उगाते हैं।

श्री मुत्तप्पा पुजारी, कर्नाटक से हैं। वे केवल पांचवी पास हैं। उनके पास आठ एकड़ जमीन है। वे इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम का प्रयोग कर खेती करते हैं। वे खरीफ मौसम में लाल चना, कपास,

अदरक और पत्तेदार सब्जियां उगाते हैं और खरीफ फसलों की कटाई के तुरंत बाद रबी के लिए गेहूँ, मिर्च, चना और ज्वारी की फसलें लगाते हैं। कोई एक फसल खराब होने पर भी दूसरी फसलों से आमदनी की संभावना रहती है।

श्रीमती सुचित्रा राँय, असम से एक महिला किसान है। जब उन्होंने खेती की शुरुआत की तो उनकी आय काफी कम थी लेकिन कृषि विभाग और केवीके, कोकराझार से प्रशिक्षण और अच्छे गुणवत्ता के बीजों का उपयोग और समय पर कृषि विभाग एवं केवीके से इनपुट मिलने के कारण उनकी वार्षिक आय बढ़कर कई लाख रुपये हो गई है।

श्रीमती पी.सी. लालरिनलियानी, मिजोरम से हैं। वह क 58 वर्षीय महिला किसान हैं। आज वह एक स्वतंत्र किसान के रूप में अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही हैं। वह एक पारंपरिक किसान थी, जिनके पास एक हेक्टर भूमि थी। वह पुरानी पारंपरिक खेती प्रणाली का उपयोग कर सब्जियां जैसे कद्दू, टमाटर, अदरक आदि उगा रही थी। नई कृषि तकनीकी का ज्ञान न होने के कारण कड़ी मेहनत के बावजूद वे अच्छी फसल नहीं उगा पाती थी। केवीके, लवंगतलाई ने उन्हें सब्जियों की बेहतर किस्मों और मशरूम की खेती के साथ सब्जियों की इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम में प्रशिक्षण दिया। आज वह केवल अपने परिवार की देख-रेख ही नहीं पर कई उस जैसी विधवा महिलाओं को रोजगार प्रदान करने में सक्षम हो गई हैं।

भारत में खेती अर्थव्यवस्था का एक उल्लेखनीय हिस्सा है। सर्वेक्षण रिपोर्ट के मुताबिक जीडीपी में कृषि की लगभग 20 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

कृषि और कृषक का एक बहुत ही सुंदर और अदभूत रिश्ता है। कृषक की कर्मभूमि उसका खेत होती है। वह जी जान से रात दिन मेहनत कर अपनी कर्मभूमि में अपना कर्तव्य निभाता है। जिस तरह सैनिक सीमा पर हमारी सुरक्षा के लिए तैनात रहते हैं और उनकी वजह से हम रात को चैन की निंद सो पाते हैं उसी तरह कृषक खेतों में अपना योगदान दे रहे हैं या कहे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, इसलिए हम भर पेट खाकर रात को चैन की नींद सो रहे हैं।

कृषकों को देशवासियों का कोटि-कोटि प्रणाम !

कृष्ण की महिमा

श्री मनोज कुमार, वैज्ञानिक सहायक
मौसम पूर्वानुमान समूह

तुम ही हो कण-कण, विश्व तुम ही हो
तुम ही सख हो, गुरु तुम ही हो ।
तुम ही तो जड़ हो, तुम हीहो चेतन
तुम ही अन्त हो, आरंभ तुम ही हो ।
तुम्हारे चरणों की धूल से तो विरंचि-शिव भी मोक्ष पाते ।
हैं धन्य गोकुल की गोपिकांये, जिन पे मोहन भी मोह जाते ।

तुम ही राधिका के साँवरे हो
तुम ही यशोदा के प्राण प्यारे ।
तुम ही हो गीता का ज्ञान सारा
तुम ही द्वारिका के भूप न्यारे ।
तुम्हारी वंशी की तान सुनकर सकल चराचर हैं झूम जाते ।
हैं धन्य गोकुल की गोपिकांये, जिन पे मोहन भी मोह जाते ।

तुम ही तो तपते हो सूर्य बनकर
तुम ही चाँदनी में नूर भरते ।
तुम ही करुणा के सिन्धु, मोहन
तुम्हारी माया से देव डरते ।
यहाँ तुम हो हो, वहाँ तुम ही हो, तुम ही से जन्मे, तुम ही पे खोते
हैं धन्य गोकुल की गोपिकांये, जिन पे मोहन भी मोह जाते ।

ऐसी कौन सी जगह है,
जहाँ पर सड़क है पर गाड़ी नहीं,
जंगल है पर पेड़ नहीं और
शहर है पर घर नहीं

उत्तर-मानचित्र



गुरुवायूर में एक दिन

श्रीमती स्मिता ए. नायर, मौसम विज्ञानी - ए
जलवायु निगरानी, विश्लेषण तथा प्रागुक्ति समूह

गुरुवायूर मंदिर केरल का एक प्रसिद्ध कृष्ण मंदिर है। इसे अक्सर 'भूलोक वैकुंठम' कहा जाता है जिसका मतलब है पृथ्वी पर भगवान विष्णु का पवित्र निवास। गुरुवायूर का निकटतम हवाई अड्डा कोच्ची, अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, जो यहाँ से लगभग 65 कि.मी. की दूरी पर है।

सुबह-सुबह 3 बजे स्नान कर तैयार हो कर हम मंदिर दर्शन के लिए गए। सड़कों पर लोगों की भीड़ लगी थी। हर कोई 'बाल कृष्ण' की एक झलक देखने के लिए कतार में खड़े होने के लिए दौड़ रहा था। पहले निर्माल्य और वाकाचारतु पूजा में शामिल हुए। उस पल भगवान में लीन होकर मैं एक लग दुनिया में पहुँच गई जहाँ केवल विश्वास और करुणा थी। उसके बाद अन्य देवताओं के दर्शन की ओर बढ़े।

फिर हमने सीवेली में भाग लिया। सीवेली एक औपचारिक जुलूस है जिसमें सजावटी आवरणों में अलंकृत हाथी होते हैं। इस पूजा के दौरान, भगवान गुरुवायूरप्पन की मूर्ति को पुजारी द्वारा हाथी पर ले जाया जाता है और मंदिर के चारों ओर तीन बार चक्कर लगाया जाता है। लोभी पंचवद्यम (पांच वाद्ययंत्रों के साथ एक ऑर्केस्ट्रा) बजाते हुए इस जुलूस में शामिल होते हैं।

कई माता-पिता अपने नन्हे-मुन्नों के साथ अन्नप्रसादम की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो एक बच्चे का पहला चावल खिलाने का समारोह है। हमने प्रसादम काउंटर से प्रासद एकत्र किया कुछ मिनट वहाँ बैठकर और चुपचाप प्रार्थना करने के बाद, हम बाहर आ गए।

हम फिर मम्मियूर भगवान शिव के मंदिर गए जो गुरुवायूर मंदिर से लगभग एक से दो किलोमीटर दूर है और वहाँ भी प्रभु के अच्छे दर्शन हुए।

गुरुवायूर मंदिर कई हस्तशिल्प की दुकानों, होटलों, मिठाई की दुकान, कपड़ों की दुकान, फैंसी स्टोर, आइसक्रीम पार्लर आदि से घिरा हुआ है। हमने कुछ समय खरीदारी पर बिताया।

हमने पास के पुनाथूर कोट्टा आना थवलम का भी दौरा किया, जहां मंदिर के हाथियों को संभाला जाता है। वहां 50 से अधिक हाथी रखे गए थे। हाथियों ने सूंड उठाकर हमारा स्वागत किया। कुछ बहुत छोटे हाथी के बच्चे सिर हिला रहे थे और पूँछ लहरा रहे थे। कुछ शरारती हाथियों ने दर्शकों पर पानी और कीचड़ उछाला।

फिर हमने अपना समय पास के चावक्कड समुद्र तट पर बिताने का फैसला किया। वहां हमने डॉलफिन मछलियों को देखा। इस समुद्र तट की खास बात यह है कि यहां नदी और समुद्र का मिलन है जो केरल में अक्सर देखने को नहीं मिलता है।

पूर्ण संतुष्टि के साथ हम अपने घर वापस आ गए।



गुरुवायूर मंदिर, केरल

“हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है”

उसके नाम की थी

हरिष देशमुख, सहायक
प्रशासन अनुभाग, जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं

जिंदगी में रौनक तो
उसके प्यार की थी,
उजाला उसके नाम का था
रोशनी उसके नाम की थी ।

खुशी उसके नाम की थी,
हसी उसके नाम की थी,
सीने में हर धड़कन,
उसके नाम की थी ।

हम तो बस जिंदगी जी रहे थे,
मगर सासों में रवानगी
उसके नाम की थी,
जबसे रुठे हैं हमसे,
मिलता नहीं करार कहीं,
कैसे यकीन दिलाए उसको,
हर उम्मीद बस
उसके नाम की थी ।

खुद कभी वह कुछ न खाए,
लेकिन सबको खूब खिलाए ।



उत्तर - चम्मच

नगर वन योजना - एक कदम हरियाली की ओर

श्रीमती मोनिका संगवाहिया, वैज्ञानिक सहायक
जलवायु निगरानी, विश्लेषण एवं प्रागुक्ति समूह

भारत के वन आर्थिक गतिविधियों, चाहे वह कृषि या औद्योगिक मूल की हो, से होने वाले प्रदूषण के विरुद्ध सुरक्षा की पहली पंक्ति है। इसलिए भारत के वन क्षेत्र को संरक्षित करने और बढ़ाने तथा जलवायु परिवर्तन के खतरों का सामना करने के लिए पर्याप्त नीतिगत हस्तक्षेपों के साथ इसे संरक्षित करने की आवश्यकता है।

पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय शहरीकरण के दुष्परिणामों से निपटने के साथ कार्बन भंडार को अधिकतम करने के लिए वन गुणवत्ता बढ़ाने और वृक्षों के आवरण को बढ़ाने हेतु ध्यान केंद्रित कर रहा है।

इसी के चलते 5 जून 2020 को पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अगले पांच वर्षों में देश भर में 400 नगर वन और 200 नगर वाटिका विकसित करने के लिए 'नगर वन योजना' के कार्यान्वयन की घोषणा की है।



इस योजना की शुरुआत 2015 में की गई। वन विभाग और स्थानीय निकाय के साथ मिलकर की गई पुणेवासियों की पहल ने 16.8 हैक्टर बंजर पहाड़ी क्षेत्र को हरे-भरे जंगलों में बदल दिया। आज, यह जंगल पौधों की 23, पक्षियों की 29, तितलियों की 15, सरीसृपों की 10 और स्तनपायी जंतुओं की 3 प्रजातियों के साथ जैव विविधता से समृद्ध है। यह शहरी वन परियोजना अब पर्यावरण और सामाजिक आवश्यकताओं दोनों की पूर्ति करते हुए पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने में मदद कर रही है। वारजे शहरी वन अब देश के बाकी हिस्सों के लिए रोल मॉडल है।

पारंपरिक रूप से जैव-विविधता के संरक्षण के लिए दूरस्थ जंगली क्षेत्रों पर ही ध्यान दिया जाता है। किंतु बढ़ते हुए नगरीकरण को देखते हुए आज आवश्यकता है कि शहरी क्षेत्रों में भी जैव विविधता का संरक्षण किया जाए, इसलिए शहरों में वन लगाने का विचार आया है। नगर वन योजना (NVY) की पायलट योजना में 2020-21 से 2024-25 की अवधि के दौरान देश में 400 नगर वन और 200 नगर वाटिका विकसित करने की परिकल्पना की गई है, जिसका उद्देश्य जंगलों और

हरित आवरण के बाहर पेड़ को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना, जैव विविधता में वृद्धि करना, शहरवासियों को पारिस्थितिक लाभ करना है। प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण व्यवस्था क्षतिपूरक वनीकरण कोष अधिनियम 2016 (compensatory Afforestation Fund Act, 2016-CAMPA) के तहत राष्ट्रीय निधि से कार्यान्वयन के लिए 2020-21 से 2024-25 की अवधि के लिए नगर वन योजना की कुल अनुमानित लागत 895 करोड़ रुपये है।

आंध्र प्रदेश सहित 26 राज्यों में 2021-22 तक कुल 173 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। नगर वन योजना के तहत स्वीकृत नगर वन परियोजनाओं का राज्यवार विवरण नीचे दिया गया है। देश में हरित आवरण में सुधार के लिए अन्य वनीकरण प्रयासों के साथ-साथ नगर वन योजना के माध्यम से शुरु की गई विभिन्न हरित गतिविधियों की परिकल्पना की गई है।

नगर वन योजना 2021 एवं 2022 के अंतर्गत स्वीकृत परियोजनाओं का राज्यवार विवरण

क्र.सं.	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का नाम	स्वीकृत प्रस्तावों की संख्या	स्वीकृत कुल लागत (रु. लाख में)	जारी की गई धनराशि (रु. लाख में)
1	मध्य प्रदेश	11	1758.46	1230.92
2	महाराष्ट्र	6	449.88	314.92
3	तमिलनाडु	5	847.3	593.11
4	गोवा	1	205.3	143.71
5	नागालैंड	3	184.7	129.29
6	पश्चिम बंगाल	2	145.80	102.06
7	आंध्र प्रदेश	2	167.72	117.40
8	गुजरात	4	425.00	297.5
9	हिमाचल प्रदेश	2	297.8	166.46
10	मिजोरम	2	405.8	284.06
11	पंजाब	4	374.4	262.08
12	त्रिपुरा	4	504.8	353.36
13	झारखंड	4	463.2	324.24
14	छत्तीसगढ़	7	1186.82	830.77
15	असम	3	242.3	169.61
16	जम्मू और कश्मीर	2	197.8	138.46
17	हरियाणा	5	641.46	449.02
18	मणिपुर	1	205.30	143.71
19	उत्तराखंड	4	446.30	312.41
20	राजस्थान	5	501.50	351.05

21	बिहार	2	261.28	244.49
22	कर्नाटक	3	509.1	356.37
23	उड़ीसा	40	2905.95	2034.17
24	उत्तर प्रदेश	25	2811.85	1968.3
25	केरल	25	1507.54	1055.28
26	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	1	80.50	56.35

झारखंड के छह शहरों को केंद्र की महत्वकांक्षी नगर वन या शहरी वन योजना के लिए चुना गया है। इस योजना की शुरुआत केंद्र द्वारा 9 जुलाई, 2022 को की गई, जिसमें औपचारिक वृक्षारोपण शुरू हुआ। इस योजना में देश के 75 शहरों में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण किया गया। झारखंड के छह शहर जहाँ परियोजना शुरू की गई, उनमें रांची, बोकारो, धनबाद, हजारीबाग, जमशेदपुर और गिरिडीह शामिल हैं। इस योजना का उद्देश्य शहरी व्यवस्था में हरित स्थान बनाना और प्रदूषण शमन द्वारा शहरों के पर्यावरण में सुधार करने में योगदान देना, स्वच्छ हवा प्रदान करना, ध्वनि प्रदूषण में कमी और जल संचयन करना है। इससे पौधों और जैव विविधता के बारे में जागरूकता पैदा करने और पर्यावरण प्रबंधन विकसित करने में भी मदद मिलेगी।

यह योजना झारखंड जैसे राज्य के लिए महत्वपूर्ण है जहाँ वृक्षों की संख्या कम हो रही है। भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि राज्य में पिछले एक दशक में वृक्षों के आवरण में 47 वर्ग किलोमीटर की कमी आई है। एफएसआई रिपोर्ट 2021 में झारखंड का वृक्ष आवरण 2,867 वर्ग किमी, कुल भौगोलिक क्षेत्र का 3.6 प्रतिशत दर्ज किया गया था। वर्ष 2011 में, 2,914 वर्ग किमी दर्ज किया गया था। हालांकि, राज्य का वन क्षेत्र बढ़कर 23,721 वर्ग किमी हो गया है।

नगर वन योजना 2022 के लाभ

यह नगर वन योजना पहले पायलट आधार पर वन उद्यान योजना के नाम से लागू की गई थी। वन मंत्रालय ने नगर वन उद्यान योजना के तहत शहर के अंदर 25 हैक्टर जंगल को अतिक्रमणों से बचाया है और 6,500 स्वेदशी पेड़ लगाकर वनस्पति में सुधार किया है। इसके अलावा, लोगों ने अपने प्रिय की याद में पेड़ लगाए और आज वही लोग जंगल की रक्षा कर रहे हैं। इस शहरी जंगल में रोज़ाना 1,000 लोग आते हैं।

और इसी प्रकार से नगर वन योजना के नए संस्करण को दोबारा से लागू किया जाएगा और पहले की ही तर्ज पर शहरी क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा वन क्षेत्र का निर्माण किया जाएगा और ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधों को शहरों में लगाया जाएगा ताकि लोगों को शुद्ध वायु और बेहतर पर्यावरण मिल सके।

नगर वन योजना 2022 के उद्देश्य

सरकार द्वारा नगर वन योजना के नए संस्करण को देश के सभी राज्यों में लागी किया जाएगा, भारत के सभी राज्यों में इस नगर वन योजना को शुरू करने के मुख्य उद्देश्य देश के विभिन्न हिस्सों में सिटी फॉरेस्ट बनाने, सभी शहरी नागरिकों को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाने, शहरों की जलवायु को लचीला बनाने के लिए हैं। प्रत्येक शहर में एक नगर वन को नगरपालिका परिषद के साथ विकसित किया जाएगा। ताकि पौधों और जैव विविधता पर जागरूकता पैदा हो सके। वन वे हरे फेफड़े हैं जो प्रदूषण शमन, स्वच्छ हवा, शोर में कमी, जल संचयन और गर्मी द्वीपों के प्रभाव में कमी से शहरों के पर्यावरण की रक्षा करते हैं। मोटे तौर पर कहे तो इस योजना का मुख्य उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में शुद्ध पर्यावरण का निर्माण करना है।



“राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है”

अलविदा मेरे दोस्त

श्री के.एस.होसालिकर,
वैज्ञानिक - जी तथा प्रमुख
जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएँ

अलविदा मेरे दोस्त....

हवाओं का रुख क्या बदला,
मौसम बदलने को है,
सुना है, अब तु जाने को है ।

तेरे आने की खबर से,
मन फुल फुल सा हुआ था,
अब तेरे जाने की बात चल रही है,
मन धुआँ धुआँसा हो रहा है ।

नम आँखों से अब ओझल हो रहा है तु,
लेकिन हम सब के दिल से नहीं जायेगा तु,
इस देश की माटी के लिए अमृतधारा है तु,
किसानों की आँख का सपना तु,
उन्नति की डगर है तु ।

अलविदा मेरे दोस्तमेरे हमसफर,
लौट के आने वाले पद-चिन्हों पर गड़ी
रहेगी नज़र,
लेकिन मुझे पता है, तु फिर से आकर
टकराएगा,
बादलों से मोती और खेतों से सोना
उपजायेगा....
अलविदा, अलविदा मेरे दोस्त.....

प्रभाव आधारित बारिश का पूर्वानुमान

श्रीमती ज्योती सोनार, वैज्ञानिक सहायक
और डॉ अनुपम काश्यपि, वैज्ञानिक - एफ
मौसम पूर्वानुमान समूह

किसी भी चरम घटना के लिए जब चेतावनी दी जाती है, उसका असर हमारे जीवन प्रणाली पर क्या हो सकता है, इसके लिए प्रभाव आधारित पूर्वानुमान बहुत ही उपयोगी है। प्रभाव आधारित पूर्वानुमान जारी किया जाता है जिससे आपदा प्रबंधन अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई करने पर सुविधा हो और जनजीवन में असुविधा न हो।

विभिन्न महीनों में राज्यों के विभिन्न मौसम उपमंडलों में चेतावनियों की संख्या का अध्ययन किया जाता है। लगातार दिनों की चेतावनियों के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग ने पहली बार विशेष सलाह जारी की, जिससे आपदा प्रबंधकों को त्वरित शमन कार्रवाई में मदद मिलती है।

इस साल कई मौकों पर भारी वर्षा हुई, यहां तक कि घाट क्षेत्रों में भी अत्यधिक भारी वर्षा दर्ज की गई। हमारे चार मौसम समभागों में मुख्यतः जून से सितम्बर तक तथा विभिन्न महीनों में भारी (64.5 से 115.5 मिमी/दिवस), बहुत भारी (115.6 से 204.4 मिमी/दिवस) और अत्यधिक भारी (>205.4 मिमी/दिवस) वर्षा के दिनों की संख्या पर चर्चा होती है, जिसका प्रभाव जान-माल एवं संपत्ति के ऊपर ज्यादा होता है। यह प्रभाव कम करने के लिए ही प्रभाव आधारित पूर्वानुमान तथा सलाह दिया जाता है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने मुंबई, नागपुर और पुणे में अपने कार्यालयों से समय-समय पर चेतावनी जारी की। सभी भारत मौसम विज्ञान विभाग कार्यालयों ने स्थानीय/राज्य प्रशासन के साथ बहुत अच्छा संपर्क विकसित किया है जिसमें वर्षा के संबंधित चरम घटनाओं का कारण बनने वाली संबंधित प्रणालियों का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है। प्रत्येक कार्यालय से, सोशल मीडिया समूह बनाए गए हैं, जिसमें प्रिंट मीडिया, एफएम रेडियो और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया के अलावा समय-समय पर चेतावनी और अपेक्षित सलाह दी जाती है।

इस बार भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी), पुणे और मुंबई ने पहली बार विशेष सलाह के लिए प्रयास किया ताकि आपदा प्रबंधकों और अन्य उपयोगकर्ताओं को जल्द से जल्द नुकसान को ठीक करने/कम करने में सुविधा हो सके जो बहुत भारी बारिश के कारण हुई / होने की संभावना है। राज्य के मेगा शहरों (अर्थात मुंबई और पुणे) के लिए भविष्य में इसमें और सुधार के लिए गंभीर रूप से विशेष सलाह का अध्ययन भी किया जा रहा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा जारी अत्यधिक वर्षा के सटीक पूर्वानुमान, चेतावनियों और विशेष सलाह ने राज्य के बड़े शहरों में स्थानीय शासन और आपदा प्रबंधकों का विश्वास उत्पन्न किया। भारत मौसम विज्ञान विभाग, स्थानीय प्रशासनिक निकायों के आपदा प्रबंधकों और अन्य उपयोगकर्ताओं के बीच समन्वित कार्य के परिणामस्वरूप अत्यधिक वर्षा के कारण नुकसान कम होता है।

मौसम पूर्वानुमान और चेतावनी जारी करने के बाद कौनसा प्रभाव अपेक्षित होता है तथा उसके लिए कौनसी कार्रवाई सुझाई गयी है, इसका भी एक विश्लेषण/वर्णन पदा प्रबंधन कार्यालय में भेज दिया जाता है। यह वर्णन (रिपोर्ट) इस प्रकार होता है:-

पुणे और आसपास के क्षेत्र में बारी वर्षा के लिए प्रभाव आधारित पूर्वानुमान

दिनांक	09 जुलाई, 2022
इसमें 3 घंटे के बाद मध्यम या तेज प्रकृति बारिश का दैनिक वर्णन दिया जाता है (बारिश मिलिमीटर में प्रति 3 घंटे: जैसे की- भारतीय समयानुसार 0830 बजे पर बारिश हुई (पिछले 24 घंटे में)	जैसे की - पुणे शहर में 1-2 तीव्र स्पेलस के साथ मध्यम वर्षा हुई। शिवाजीनगर: 16.3 मिमी पाषाण: 19.9 मिमी लोहगांव: 18.0 मिमी चिंचवड: 22.0 मिमी लवले: 26.0 मिमी मगरपट्टा: 10.5 मिमी
पूर्वानुमान और चेतावनी इसमें लगातार चेतावनी जब दी जाती है, उसका दैनिक वर्णन दिया जाता है।	जैसे की - घने बादल छाए हुए, मध्यम बारिश (15.6-64.4 मिमी) से कहीं कहीं स्थानों पर भारी बारिश (64.5-115.5 मिमी), तेज दौर (spells)के साथ, घाट में कहीं कहीं स्थानों पर अतिभारी बारिश (115.6 से 204.4 मिमी) के साथ अत्यंत भारी बारिश (≥ 204.5 मिमी) की संभावना है।
प्रभाव अपेक्षित क्या प्रभाव होनेवाला है, इस बारे में वर्णन दिया जाता है।	जैसे की - <ul style="list-style-type: none"> • तीव्र अवधि के दौरान दृश्यता में भारी कमी, फिसलन भरी सड़क। • गड्ढों वाली आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त सड़कें। • यातायात प्रवाह में बड़ा व्यवधान। • नदी तट/घाटों से तटे निचले इलाकों के कुछ हिस्सों में जलजमाव की संभावना। • सड़क किनारे पेड़ों/शाखाओं आदि के गिरने/उखड़ने की संभावना। • सड़कों के किनारे ऊंचे पहाड़ी इलाकों में मामूली भूस्खलन की संभावना। • टेलीफोन/सेवाओं में मामूली व्यवधान।
कार्रवाई सुझायी गई	जैसे की -

क्या आपत्कालीन कार्रवाई की जाएगी, इसका वर्णन दिया गया है।	<ul style="list-style-type: none"> यातायात की गति को प्रभावी ढंग से/धीरे-धीरे नियंत्रित किया जा सकता है। प्रभावित क्षेत्रों के लोग पने आने जाने को प्रतिबंधित कर सकते हैं। घाट क्षेत्रों में जाने से बचें।
---	---

क्या मानक रंग दिया जाएगा, वह इस प्रकार होते हैं:-

रंग कोड	
बहुत कम	कोई कार्रवाई नहीं
कम	अपडेट रहें
मध्यम	तैयार रहें
उच्च	कार्रवाई करें

बारिश की तीव्रता के मुताबिक क्या शब्दावली देनी चाहिए, उसका विस्तार इस प्रकार दिया जाता है:-
मौसम शब्दावली:

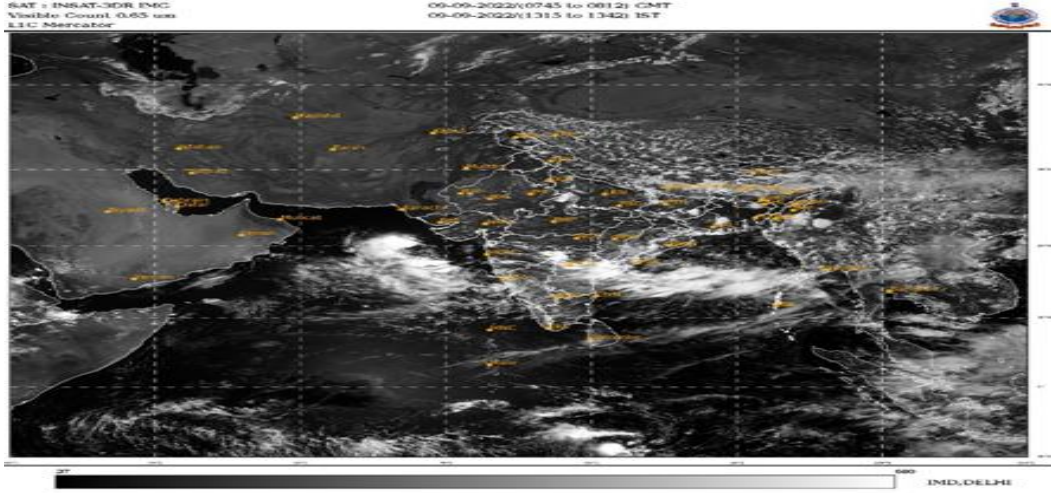
वर्षा की तीव्रता			
शब्दावली	बारिश सीमा	शब्दावली	बारिश सीमा
	1 सेंमी प्रति घंटा	अतितेज	3-5 सेंमी प्रति घंटा
मध्यम स्पेल्स	1-2 सेंमी प्रति घंटा	अत्यंत तेज स्पेल्स	5-10 सेंमी प्रति घंटा
तेज स्पेल्स	2-3 सेंमी प्रति घंटा	बादल फटना	>10 सेंमी प्रति घंटा

बारिश की श्रेणियों के निम्नलिखित प्रकार होते हैं:-

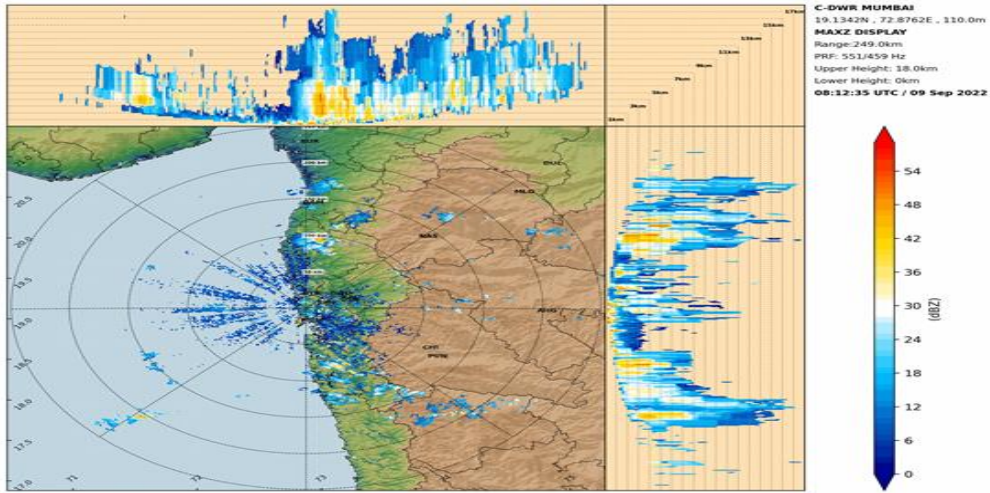
वर्षा की श्रेणियां			
शब्दावली	बारिश (मिमी में)	शब्दावली	बारिश (मिमी में)
अति हल्की बारिश	ट्रेस - 2.4	भारी बारिश	64.5-115.5
हल्की बारिश	2.5-15.5	अति भारी बारिश	115.6-204.4
मध्यम बारिश	15.6-64.4	अत्यंत भारी बारिश	>=204.5

इसके साथ उपग्रह चित्र और रडार चित्र भी दिया जाता है।

चित्र 1: उपग्रह चित्र जिसमें महाराष्ट्र राज्य में भारी से अतिभारी बारिश की चेतावनी दी है ।



चित्र 2: रडार चित्र जिसमें बादल की स्थिति दर्शायी गयी है ।



निष्कर्ष: प्रभाव आधारित पूर्वानुमान आपदा प्रबंधन कार्य में बहुत ही उपयोगी है । यह बारिश के चरम घटनाओं के चेतावनी के समय आम आदमी को सुझाव तथा उचित समय में सुरक्षित रहने का उपया दर्शाता है । पुणे तथा महाराष्ट्र के लिए प्रभाव आधारित पूर्वानुमान एक नया संयोजन है, जो की बहुत ही कार्यकारी साबित हुआ । यह देखा गया है कि सही समय पर इसकी जानकारी जान-माल तथा संपत्ति के नुकसान से हमें बचाता है ।

बच्चों ! एक लाठी की सुनो कहानी,

छुपा है जिसमें मीठा-मीठा पानी ।



उत्तर - गन्ना

“हमारी राष्ट्रभाषा का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीयता का दृढ़ निर्माण है”

प्रवासी पक्षी

श्रीमती स्वाती देउसकर,
ग्रंथपाल एवं सूचना सहायक
पुस्तकालय अनुभाग,

कुछ दिन पहले “व्हाट्स एप यूनिवर्सिटी” से किसी ने फ्लेमिंगो (Flamingo) के झुंड का एक प्यारा सा चित्र भेजा, जिससे मेरी प्रवासी पक्षियों के बारे में जानने की जिज्ञासा बढ़ गई। पक्षियों का स्थलांतर सामान्य रूप से उत्तर-दक्षिण दिशा में पाया जाता है। भारत में आने वाले पक्षी अति उत्तर क्षेत्र जैसे साइबेरिया से आते हैं। पुणे के नज़दीक भी कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ पर ये और दूसरे पक्षी अपना डेरा डालते हैं।

सहज रूप से मन में प्रश्न उठता है क्योंकि ये पक्षी इतना लंबा सफर करते हैं ?

भोजन - उनके प्रवास के प्रमुख कारणों में से एक है। यदि वे सभी एक ही स्थान पर रहेंगे तो प्रजनन के समय भोजन समाप्त हो जाएगा या दुर्लभ हो जाएगा। इसीलिए वे खाद्य से भरपूर क्षेत्रों में स्थलांतरण करते हैं।

घोंसले बनाते समय भोजन की कमी, वयस्क पक्षियों को प्रभावित करेगी और बहुत सारे शिकारी पक्षियों का भी ध्यान आकर्षित करेगी।

पक्षी हमेशा अपने परिवार के लिए प्रवास करते हैं खास कर परिवार की स्वस्थ संतान के लिए। उन्हें अपनी संतान की पालन-पोषण के लिए हमेशा अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है जैसे भोज के अच्छे स्रोत, अनुकूल मौसम, आवास, प्रजनन कालोनी, सुरक्षा आदि।

जलवायु परिवर्तन भी उनको स्थानांतरण करने पर मजबूर कर देता है जैसे अतिरिक्त गर्मी या ठंड। कई बार तो शिकारियों से बचने के लिए वे दुर्गम स्थान पर चले जाते हैं।

इन यात्राओं के दौरान, पक्षियों का झुंड सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा तय कर लेते हैं। उदाहरण के तौर पर ‘आर्कटिक टर्न’ नामक पक्षी को ही ले लीजिए। ये मध्यम आकार का पक्षी उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक की 90,000 किलोमीटर की यात्रा करता है।

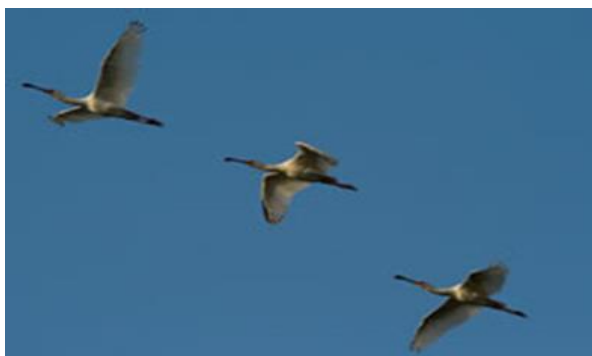
ऐसे लंबे सफर पर निकलने के पहले, पक्षी कुछ खास तैयारी भी करते हैं जैसे यात्रा के दौरान अतिरिक्त ऊर्जा प्रदान करने के लिए अतिरिक्त वसा के आपूर्ति का निर्माण। वे अपनी उड़ान आसान बनाने के लिए अपने पुराने पंख भी गिराते हैं ताकि उड़ने में ऊर्जा कम लगे तथा शरीर के वजन को बढ़ाकर भोजन और पानी का भंडार बनाते हैं। तेज यात्रा के लिए अधिक ऊंचाई पर उड़ते हैं तथा अनुकूल दिशा में चल रहे हवा के प्रवार पर सवार होते हैं, जिससे उनकी बहुत सारी समस्याएं खत्म हो जाती हैं। लेकिन मानव निर्मित गंभीर समस्याएं उन्हें झेलनी पड़ती हैं जैसे सुरक्षित अधिवास का

नष्ट हो जाना या प्रदूषित होने के कारण खाद्य की कमी होना, मानव द्वारा शिकार, रात में शहरों का प्रकाशमान होना आदि ।



लेकिन इन प्रवासी पक्षियों की सुरक्षा करना स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र और दुनिया के हर क्षेत्र के लोगों की भलाई के लिए जरूरी है । प्रवासी पक्षी बीजों के फैलाव में मदद करते हैं जिससे उनके मार्गों पर जैव विविधता का रखरखाव होता है जैसे बत्तख अपनी पेट में मछली के अंडे कई किलोमीटर दूर ले जाते हैं । इन पक्षियों की विष्ठा में नाइट्रोजन की मात्रा भरपूर होती है और जैविक उर्वरक के रूप में काम करती है, यात्रा के दौरान वे असंख्या कीटकों का अंत कर देते हैं, फसल बीज का फैलाव करते हैं संक्षेप में स्वस्थ पर्यावरण में प्रवासी पक्षियों का महत्वपूर्ण स्थान है और उन्हें बचाने का प्रयास करना जरूरी है ।

इस बारे में जनजागृती करने के लिए, विश्व प्रवासी पक्षी दिवस साल में दो बार मनाया जाता है - मई और अक्टूबर का दूसरा शनिवार । कन्वेंशन ऑन माइग्रेटरी बर्ड्स प्रतिवर्ष एक विषय का चयन करता है - इस वर्ष का विषय है Light Pollution अर्थात प्रकाश प्रदूषण । हर साल, दुनिया के बड़े शहर रात के समय अधिकाधिक प्रकाशमान होते जा रहे हैं जो प्रवासी पक्षियों की यात्रा में बाधाएं डालती है । UNEP ने इस बारे में अपील करने के बाद दुनिया के प्रमुख शहरों में स्प्रिंग और ऑटम ऋतु में, इमारतों पर लगी प्रकाश व्यवस्था में सुधार लाना शुरू किया है । इससे और पर्यावरण को सुरक्षित रखना आदि उपायों से प्रवासी पक्षी फिरसे आश्वस्त हो कर अपनी यात्रा पर निकले और पूरी दुनिया को एक सुरक्षित स्थान महसूस करें ।



मेरी विदेश यात्रा

श्रीमती स्वाती चंद्रस, मौवि -ए
कृषि मौसम विज्ञान समूह

हाल ही में, मुझे यू.के. जाने का सौभाग्य मिला है। इसके पीछे का कारण कार्डिफ विश्वविद्यालय, कार्डिफ (वेल्स) में मेरी बेटा का दीक्षांत समारोह था। यह सच है कि यात्रा में नये स्थानों पर जाना और नये लोगों से मिलना और विविध अनुभव होना शामिल है। सैमुअल जॉनसन ने कहा है कि “सभी यात्रा के अपने फायदे हैं। यदि यात्री बेहतर देशों का दौरा करता है, तो वह अपने स्वयं को सुधार करना सीख सकता है। और अगर भाग्य उसे और खराब कर देता है, तो वह इसका आनंद लेना सीख सकता है।”

यह एक नियमित जीवन शैली से मुक्त होने का आदर्श अवसर था। मैंने अपनी यात्रा के दौरान बहुत आराम महसूस किया और नये दृश्यों और परिदृश्यों को देखने का आनंद लिया। यह मेरी यूके की पहली यात्रा थी। जब मैं हीथ्रो में उतरी, तो हर जगह अच्छी तरह से रोशनी वाला क्षेत्र, यात्री सूचना बोर्ड, संकेत और सफाई देखकर चकित रह गयी। एयरपोर्ट पर सभी औपचारिकताएं पूरी करना बेहद आसान था।

मैंने जिन स्थानों का दौरा किया, उनकी यात्रा के दौरान, मैंने विशेष रूप से देखा कि जहाँ भी आवश्यक हो वहाँ फुटपाथ, चिह्नित साइकिल ट्रैक और सार्वजनिक परिवहन खोजने में आसान थे। फुटपाथ और सार्वजनिक स्थान सभी प्रकार के लोगों के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल थे। मैंने देखा कि हर खाली जगह पेड़ों से भरी हुई है और रेलवे ट्रैक और मोटरमार्ग के दोनों ओर पेड़-पौधे हैं।

मैंने नई संस्कृतियों और विभिन्न जीवन शैली को देखा। यह बहुत रोमांचक था। मैंने उनकी जीवनशैली का हिस्सा बनने के लिए उनके भोजन के साथ-साथ उनके कपड़ों को भी आजमाया। इससे मुझे उनके बात करने, गाने, आनंद लेने, नृत्य करने, लिखने, निर्माण करने, कपड़े पहनने और व्यवसाय करने के विभिन्न तरीकों के बारे में जागरूक होने में मदद मिली। साथ ही, मैंने देखा कि यूके के लोग मूल रूप से एक जैसे हैं लेकिन वे संस्कृतियों में भिन्न हैं।

यू.के. में अपने प्रवास के दौरान, मैंने अनेक स्थानों जैसे, सिटिंगबोर्न, कैंटबरी, लंदन, ग्रीनविच, केंसिंगटन, हर्न बे, कार्डिफ बे और एडिनबर्ग का भ्रमण किया। हर जगह की अपनी एक अलग पहचान होती है। मैंने पैदल, ट्रेन और बस से यात्रा करके अधिकतम खोज की।

सिटिंगबोर्न दक्षिण पूर्व इंग्लैण्ड के कैंट में एक औद्योगिक और कृषि शहर है। शहर का नाम इस तथ्य से आया है कि शहर के हिस्से में एक छोटी सी धारा या 'बोर्न' भूमिगत चल रही है।

कैंटबरी, दक्षिणपूर्व इंग्लैण्ड का एक गिरजाघर शहर, मध्य युग में एक तीर्थ स्थल था। प्राचीन दीवारें, जो मूल रूप से रोमनों द्वारा बनाई गई थी, इसके मध्यकालीन केंद्र को कोबल्ट सड़कों और लकड़ी के बने घरों के साथ घेरती है।

लंदन, इंग्लैण्ड और यूनाइटेड किंगडम की राजधानी, बिग बेन, बकिंगहम पैलेस, ब्रिटिश संग्रहालय, टॉवर ब्रिज, समृद्ध इतिहास, डबल-डेकर बसों, रेड फोन बूथ, विश्व स्तरीय संग्रहालयों

और दीर्घाओं, विशाल हरे भरे पार्क, वित्तीय के लिए प्रसिद्ध है। मैडम तुसाद और लंदन डंगऑन लंदन में सबसे प्रसिद्ध एतिहासिक पार्क हैं, हालांकि अन्य भी कम महान नहीं है। वेस्टमिंस्टर एब्बे का दौरा किए बिना, संसद के सदनों को देखे बिना, बंकिघम पैलेस मं कार्ड ऑफ चेंजिंग को देखते हुए लंदन छोड़ना असंभव है।

ग्रीनविच लंदन, इंग्लैण्ड में थेम्स नदी के तट पर स्थित एक शहर है। ग्रीनवीच अपने समुद्री इतिहास के लिए और ग्रीनविच मेरिडियन (0 डिग्री देशांतर) और ग्रीनवीच मीन टाइम को अपना नाम देने के लिए उल्लेखनीय है। शांतिपूर्ण ग्रीनवीच पार्क के दृश्य के साथ, रॉयल ऑब्जर्वेटरी (वेधशाला), ग्रीनवीच मेरिडियन लाइन का स्थल है। शेफर्ड गेट क्लॉक (घड़ी) वेधशाला के द्वार पर स्थापित किया गया था, और ग्रीनवीच मीन टाइम (जीएमटी) को सीधे जनता को दिखाने वाली पहली घड़ी है। वह यह घड़ी है कि इसक चेहरे पर सामान्य 12 के बजाय 24 घंटे होते हैं। इसका मतलब है कि दोपहर 12 बजे घंटे की सुई सीधे ऊपर की बजाय सीधे नीचे की ओर इशारा करती है।

केंसिंगटन आलीशान विक्टोरियन इमारतों और दूतावासों वाला एक महंगा इलाका है। पर्यटक प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय में डायनासोर देखने के लिए आते हैं, विज्ञान संग्रहालय में व्यवहारिक प्रदर्शन और केंसिंगटन पैलेस में पुराने समय के साज-सामान को देखने आते हैं। भव्य रॉयल अल्बर्ट हॉल में शास्त्रीय से लेकर पॉप तक संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। केंसिंगटन हाई स्ट्रीट पर अच्छे-अच्छे खरीदार अक्सर आकर्षक बुटीक और केंसिंगटन चर्च स्ट्रीट पर प्राचीन वस्तुओं की दुकान करते हैं।

हर्न बे कैंट का क्लासिक सीसाइट टाउन है, जिसमें मनोरंजन घाट, पारिवारिक मनोरंजन और एक लंबा रेतीला समुद्र तट सहित पारंपारिक रिसॉर्ट आकर्षण हैं।

कार्डिफ वेल्स की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है। कार्डिफ को व्यापक रूप से दुनिया में सबसे अधिक महल वाला शहर माना जाता है। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कार्डिफ कैसल है, जो लगभग 2000 वर्षों से शहर के केंद्र में स्थित है।

एडिनबर्ग स्कॉटलैंड की कॉम्पैक्ट, पहाड़ी राजधानी है। इसमें एक मध्ययुगीन पुराना शहर और बगीचों और नवशास्त्रीय इमारतों के साथ सुरुचिपूर्ण जॉर्जियाई न्यू टाउन है। यह द रॉयल माइल, एडिनबर्ग कैसल, स्कॉटलैंड के राष्ट्रीय संग्रहालय, आर्थर की सीट, कैल्टल हिल, पैलेस ऑफ होली रुडहाउस, एडिनबर्ग के रॉयल बॉटैनिकल गार्डन और स्कॉटिश नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट के लिए प्रसिद्ध है।

लंदन में आप प्रकृति का भी लुत्फ उठा सकते हैं। रीजेंट पार्क, हाइड पार्क, ग्रीन पार्क, सेंट जेम्स पार्क और हॉलैंड पार्क जैसे कई पार्क हैं।

में लंदन के लोगों से प्रभावित हो गयी क्योंकि वे इतने विनम्र थे, एक-दूसरे का सम्मान करते थे, अनुशासन करते थे। अगर आप किसी से नज़रे मिला लेते हैं, तो वो जरूर मुस्कराएगा। मुझे लगता है कि लंदन अद्भुत है। मुझे यह वास्तव में पसंद आया क्योंकि यह एक ऐसा शहर है जो इतिहास में समृद्ध है। लंदन के लिए बहुत सम्मान।



रॉयल वेधशाला



ग्रीनविच



थेम्स नदी और लंदन आई



टॉवर ब्रिज



एडिनबर्ग



॥ मौनं सर्वार्थ साधनम् ॥

श्रीमती वृषाली जोशी, सहायक
प्रशासन अनुभाग

‘मौनं सर्वार्थ साधनं’ यह संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति है। मौन साधना की अध्यात्म-दर्शन में बड़ी महत्ता बतायी गई है। मौन रहना यानी भीतर भी बात नहीं करना, थोड़ी देर खुद से भी खामोश हो जाना।

अधिक बोलने या फिर तेज आवाज में जल्दी जल्दी बात करने से आपका हृदय कि धड़कन बढ़ सकती है, जो दिल की सेहत के लिए बिल्कुल भी ठीक नहीं है। इससे तनाव (स्ट्रेस) लेवल में कमी आती है। ऐसे में स्वस्थ रहना चाहते हैं तो कभी-कभी चुप रहने की आदत भी डाल लें। सप्ताह में एक दिन भी मौन रहते हैं तो दिल की सेहत के लिए अच्छा होता है। इससे दिमाग को शांति मिलती है। इससे एकाग्रता या ध्यान लगाने की क्षमता में सुधार होता है। अपनी सृजनात्मक शक्ति बढ़ाने के लिए मौन रहना जरूरी है। मौन व्रत से आप बेफिजूल की बातें, गॉसिप से भी बच सकते हैं। अपने गुस्से पर काबू करना चुप रहने से आ जाएगा।

महात्मा गांधी मौन के महत्व को स्वीकार करते थे। संत विनोबा भावे ने तो मौन को अपने जीवन का एक अंग ही बना लिया था।

पुरानी कहावत है कि मौन के वृक्ष पर शांति के फल लगते हैं। हम सबने मौन रखने की आदत डालनी चाहिए। शुरु में मौन का अभ्यास यह है कि हम कुछ समय के लिए चुपचाप बैठ जाएं और मन में किसी गंभीर विचार को न आने दें। इससे हमारी चिंताएं और मन की चंचलता भी कम होती है।

हमारी सेहत तंदुरुस्त रहने के लिए मनःशांति बहुत ही आवश्यक है। मौन व्रत से मनःशांति मिल सकती है। इसलिए हम सब कुछ समय मौन रखने की आदत डालें।

डब्बे पर डब्बा, डब्बे का गांव,
चलती फिरती बस्ती है, लोहे के पांव।



उत्तर - रेलगाड़ी

लड़ना जरूरी है

तपेश कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक
प्रशासन अनुभाग, जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं

लड़ना बहुत जरूरी है
कभी खुद से, कभी दुनिया से
कभी अपनों से, कभी गैरों से
ऊंची ऊंची चोटी फतह करने के लिए
पहाड़ पर चढ़ना बहुत जरूरी है ।
कुछ नया करने के लिए
लड़ना बहुत जरूरी है ॥

बैर तो करना पड़ेगा
पढ़ने के लिए नियत से बैर
सेहत के लिए मन से बैर
सोना बनने के लिए पसीने में सड़ना बहुत जरूरी है
खुद को बचाए रखने के लिए लड़ना बहुत जरूरी है ॥

सभ्यता के नाम पर जंगल है ये दुनिया
भरे हुए को भरे और गरीब का खाली
बिना बात के घमण्ड में चूर है ये दुनिया
डायर को रोकने उधम सिंह बनना बहुत जरूरी है
खून में उबाल लाकर लड़ना बहुत जरूरी है ॥

तू एकलव्य का वंशज, पसीने से तेरी यारी
आलस्य तेरा शत्रु, तू मेहनत का पुजारी
ये गांव-शहर हर एक जात धर्म के हैं
ये बात मनवाने के लिए सुखी चौधर से भिड़ना बहुत जरूरी है
और नए समाज के सृजन खातीर लड़ना बहुत जरूरी है ।

तू साथ कमाती भी है और अकेली रसोई में घुटती भी है
तेरा वजूद बराबर का है, तू भी बराबर की इंसान है
अपने हिस्से का सम्मान लेने के लिए
रसोई में रखे बर्तनों का खुडकना बहुत जरूरी है
लड़ना बहुत जरूरी है ॥

सचेत जीवन - एक कला

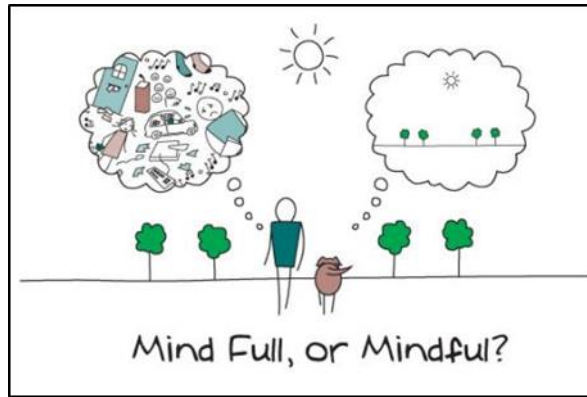
श्रीमती आरती बंडगर, वैज्ञानिक - सी
जलवायु निगरानी, विश्लेषण तथा प्रागुक्ति समूह

कोरोना महामारी के बाद बहुत सारे बदलाव मानवीय जीवनशैली में आ गए । उनमें से एक महत्वपूर्ण बदलाव यह था कि सचेतन सहित जीवन यानी की माइंडफुलनेस । दुनिया के सभी जगह में इस बारे में काफी लिखा गया है और अपने जीवनशैली में इस प्रकार का बदलाव लाने की कोशिश लोगों ने जानबूझकर की । माइंडफुलनेस का सामान्य मतलब अगर देखा जाए तो इंटरनेट के काफी सारे लेखक या यू ट्यूबर्स यही कहेंगे कि सचेत रहना ही क्षण में जीना है। माइंडफुलनेस मतलब हमारे और हमारे आस-पास की दुनिया की पल-पल की जागरुकता है। इसका सरल अर्थ यह है कि आप अपने और आपके आसपास क्या हो रहा है, इस पर ध्यान दे रहे हैं और उनसे सचेत है ।

**प्रकृति को गहराई से देखो और उसके बाद
तुम हर चीज़ को बेहतर समझ पाओगे**

.....(अलबर्ट आइन्सटाइन)

इस लेख के जरिये हम ये जानने की कोशिश करेंगे कि क्षण में जीना याने की माइंडफुलनेस का अचूक मतलब क्या है । अर्थात यह मेरा व्यक्तिगत विचार है और माइंडफुलनेस का सही मतलब हर एक व्यक्ति के हिसाब से अलग अनुभव हो सकता है । तो इसे अपनाने से पहले विशेषज्ञ की मदद या सलाह जरूर लें ।



चित्र स्रोत - <https://www.coaching.cz/mindfulness-living-full-in-the-present-moment/>

माइंडफुलनेस अपने जीवन में लाने के लिए हम धीरे-धीरे प्रयत्न कर सकते हैं । माइंडफुलनेस के कुछ महत्वपूर्ण आयाम इस प्रकार हो सकते हैं -

1. Mindful breathing – ध्यानपूर्वक साँस लेना
2. Mindful eating – ध्यान से भोजन करना
3. Mindful activities – सचेत गतिविधियां
4. माइंडफुलनेस (सचेत रहने) के लाभ

1. ध्यानपूर्वक साँस लेना -Mindful breathing

हम आजकल अपने दैनंदिन गतिविधियों में या फिर रोजमर्रा कामकाज में इतना व्यस्त हो गए हैं कि हम अपनी साँसे भी बहुत तेज रफ्तार से लेने लगे हैं। सुबह उठने से रात सोने तक हम अपनी जिंदगी एक मशीन की तरह जीते हैं, जिसमें हम अपने हृदय के स्वास्थ्य का या अपनी साँसों का जरा भी ख्याल नहीं करते हैं। इसीलिए माइंडफुलनेस अपने जीवन में लाने के सबसे पहले हमें अपनी साँसों को ध्यानपूर्वक लेना सीखना चाहिए। साँसों को सचेत रहके और अपने विचारों को कुछ देर के लिए स्थिर करके अपने हृदय स्वास्थ्य के लिए धीमे धीमे साँस (अपनी प्रकृति के अनुसार) लेना जरूरी है। इसके लिए हम ध्यान धारणा या फिर प्राणायाम जैसे क्रियाओं का उपयोग अपने दैनंदिन जीवनशैली में कर सकते हैं। इसके लिए महज अपने कीमती समय के दस मिनट भी काफी होंगे। सुबह उठकर, या रात को सोने से पहले या दिन में जब भी आपके पास दस मिनट उपलब्ध हो जाएं तब आप एक शांत जगह पर जाके अपनी तेज साँसों को थोड़ा-थोड़ा अभ्यास और प्रयोग करके धीमे धीमे से ले सकते हैं, अपनी साँसों को गौर से अनुभव कर सकते हैं या फिर अपने विचारों की शृंखला कुछ समय के लिए तोड़ कर सिर्फ और सिर्फ अपने विचार एक अन्य व्यक्ति की तरह निरीक्षण कर सकते हैं। इन दस मिनट में आप खुदको सकारात्मक पुष्टि देने के लिए स्वयं से बात चीत कर सकते हैं या आजकल मोबाइल में काफी सारे निर्देशित ध्यान या शांत ध्वनि सुनाने वाले ऐप्स या यू-ट्यूब चैनल्स उपलब्ध हैं, उनको भी आप सुन सकते हैं। या फिर अपने चिकित्सक या डॉक्टर की सलाह लेके धीमे साँस या प्राणायाम जैसे व्यायाम की साधना कर सकते हैं। जब आप ध्यानपूर्वक साँस लेना सीख जायेंगे तो आप को ही अपने आप में काफी बदलाव नजर आयेंगे, जैसे कि दैनंदिन जीवन में निर्माण हुए तनाव का शांतिपूर्वक सामना करना और विना क्रोधित होते हुए उसका हल निकलना आदि। इससे आपके स्वास्थ्य में भी अच्छे बदलाव आएंगे आपको सकारात्मक अनुभूति की प्राप्ति होगी।



चित्र स्रोत - <https://www.healthshots.com/health-news/benefits-of-meditation/>

2. ध्यान से भोजन करना -Mindful eating

माइंडफुलनेस का अगला कदम है सचेत रहकर भोजन करना। आज की पीढ़ी के लिए यह एक महत्वपूर्ण संदेश है। हम आजकल अपने आस पास में मोबाइल, टेलीविज़न, ट्रैफिक, भीड़ भाड़ और दैनंदिन चुनौतियों से इतने हद तक घिरे हुए हैं कि हम हमेशा भाग दौड़ करते हुए ही भोजन कर रहे होते हैं, चाहे वो घर में हो या बाहर काम की जगह पर। लेकिन अब हमें इस पर प्रयत्नपूर्वक काम करना पड़ेगा। हम जब भोजन करते हैं तब हमें अपने खाने को हमेशा धीरे धीरे आराम से खाना चाहिए। सब्जी का रंग हो या व्यंजनों का स्वाद हो, या अपने भोजन की मात्रा....इन सभी चीजों को एकदम ध्यानपूर्वक देखना चाहिए और अनुभव करना चाहिए। खाना खाते समय मोबाइल पे बात

करना या सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना बंद करके केवल खाने पर खुदका ध्यान केंद्रित करना चाहिए । आजकल कुछ लोग छोटे बच्चों को भी कार्टून दिखाकर खाना खिलाते हैं जो भविष्य में एक बहुत ही बुरी आदत बन सकती है । इससे खाना तेजी से निगला जा सकता है और खाने का चर्वण ठीक तरह से न होने के कारण खाने का पाचन भी ठीक से नहीं हो पाता है जिसके कारण मोटपा या अपचन जैसी गंभीर अवस्था का सामना करना पड़ सकता है । कुछ व्यस्त लोग कहेंगे कि हमारे पास इतना समय नहीं होता की हम इतना ध्यान से भोजन करें परंतु हमें कोशिश करके इसकी आदत बनानी चाहिए ताकि यह हमारी जीवनशैली का एक भाग हो और हम खाना खाते समय एक जगह पे बैठ के, हर एक निवाले का स्वाद लेते हुए, भोजन से मिलनेवाली ताकत को महसूस करते हुए सचेत रूप से संपूर्ण खाना खाये । इस आदत का लम्बे दौर के लिए शरीर को बहुत फायदा मिल सकता है जैसे कि मधुमेह या रक्तचाप जैसी जीवनशैली से संबंधित बीमारियों से दूर रहना या फिर कुल मिलाकर पूरा शरीर तंदुरुस्त रहना । अर्थात जब हम ऐसे सचेत रहकर खाना खाते हैं तब हम तनाव पूर्ण विचारों को काफी हद तक दूर रख सकते हैं और वर्तमान क्षण में रहना सीख लेते हैं ।



चित्र स्रोत - <http://total-yoga.org/benefits-mindful-eating/>

3. सचेत गतिविधियां -Mindful activities

माइंडफुलनेस का एक महत्वपूर्ण पहलु यह भी है कि हमारी सब गतिविधियां सचेत भाव से प्रेरित हो । इसमें हमारी दैनंदिन क्रियाओं का समावेश किया जा सकता है । सुबह से लेकर हमारे शरीर को जैसे चाबी देकर शुरु किया हो ऐसा बर्ताव हम हमारे शरीर से करवाते हैं । लेकिन अब यह कही न कहीं हमारे शरीर को काफी नुकसान पहुंचा रहा है । और हमारा बर्ताव आस पास के परिसर या प्रकृति को भी हानि पहुंचा रहा है । इसके कुछ उदाहरण हम हमेशा देखते हैं । जैसे कि हम कुछ भी काम करते समय अतीत में बीती हुई बातें या भविष्य में क्या करना है यह बातें सोचते हुए वर्तमान का काम करते रहते हैं । चाहे हम सुबह ब्रश कर रहे हो या खाना बना रहे हो । हम वर्तमान में रहकर या जागरुक रहकर चलता हुआ काम नहीं करते हैं । या जब भी हम यात्रा (बस या ट्रेन से) करते हैं, हम आस पास के सुंदर निसर्ग को या अपने लोगों को अनदेखा करते हैं, हम मोबाइल में सोशल मीडिया देखते हैं या कुछ चिंता करते रहते हैं । जब भी हम शॉपिंग करने जाते हैं तो उस शॉपिंग का पर्यावरण पर क्या असर (जैसे कि प्लास्टिक बैग्स, आदि) पड़ सकता है ये कभी नहीं सोचते या बहुत कम समय सोचते हैं और बस खरीदते जाते हैं (इसमें कुछ अपवाद भी जरूर होंगे, मैं उन सभी लोगों का यहाँ आदर करती हूँ) । कभी कभी हम अपने लोगों पर ही बहुत गुस्सा होते हैं और हम क्यों गुस्सा हुए यह

सोचकर बाद में पछतावा करते रहते हैं। कभी कभी हम पुस्तक पढ़ते हैं या सिनेमा देखते हैं लेकिन फिर भी एक हाथ से मोबाइल में स्क्रोलिंग करते रहते हैं। जैसे कि रात को सोने से पहले भी मोबाइल स्क्रीन का बहुत देर तक इस्तेमाल करते रहते हैं और शरीर को आवश्यक निद्रा उचित रूप से नहीं लेते हैं। या हम सुबह वॉक पर या जिम में तो जाते हैं लेकिन मन में लाखों विचार चल रहे होते हैं। यह सभी उदाहरण इसी बात को पुष्टि देते हैं कि हम अपनी गतिविधियों को कितने तीव्रता से निपटाते रहते हैं और कहीं पर भी हम सचेत रहने की कोशिश नहीं करते हैं। इसलिए सचेत पूर्ण जीवन का यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा है कि हमारी हर एक गतिविधि चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामाजिक हो लेकिन वो जागरूक तथा माइंडफुल हो।



चित्र स्रोत - <https://knilt.arcc.albany.edu/Unit 3: Different Types of Mindfulness Practices>

हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं, इसका विचार और शांत मन से हमें कोई भी गतिविधि उसी क्षण में जीवित रहकर करनी चाहिए, ना की अतीत या भविष्य का विचार करते हुए उसे यंत्रवत तरीके से करना चाहिए। आखिर हम क्यों जीते हैं, हमें जिंदगी की छोटी छोटी खुशियों का मजा लेना होता है, लेकिन अगर हम यही सोचते रहेंगे की बाद में देखेंगे तो जिंदगी ऐसी ही तेजी की रफ्तार से चली जाएगी और हमारे हात में अंत में सिर्फ सोचना रह जाएगा। इसलिए सचेतपूर्ण जीवन हमें ऐसी परिस्थिति से बचा सकता है।

4. माइंडफुलनेस (सचेत रहने) के लाभ

माइंडफुल जिंदगी जीने के अनेक लाभ हो सकते हैं। सबसे पहला और प्रभावशाली लाभ यह है कि स्वास्थ्य में सुधार। क्योंकि जब हम सभी काम जागरूकता और सचेतन भाव से करते हैं तो हमारे शरीर को भी कुछ आदतें नियमित रूप से लगती हैं। जैसे कि ध्यानधारणा करना, तनाव का शांतिपूर्ण स्वभाव से सामना करना, जागरूकता के साथ भोजन कर के अपायकारक अन्न से दूर रहना और मोटापे जैसी समस्या से दूर रहना, या फिर समयपर सोकर, अच्छी नींद लेना और सुबह जल्दी उठना। इन सबका संयुक्त नतीजा अपने काम में बेहतर फोकस करने के साथ साथ काम की गुणता बढ़ाने में भी पाया जाता है। सोच समझकर बर्ताव करने की आदत एक बार लग गयी तो, कोई भी समस्या या दैनंदिन बाधाओं का हल निकलने में दिल और दिमाग दोनों भी उत्तेजित नहीं होते हैं और स्थिरता से काम करते हैं और हर एक समस्या का हल ढूँढने में शरीर की ऊर्जा काम आती है ना कि उस पर व्यर्थ चिंता करके और तनाव में रहकर शरीर को हानि पहुँचाने में। इन सबके कारण स्वयं की छवि सुधर जाती है और स्वयं नियंत्रण (सेल्फ-कंट्रोल) का विश्वास खुदको और आस पास के सभी प्रियजनों को भी दिखाई देता है। सचेत जीवन के निरंतर साधना और प्रयोग में जिंदगी में आये हुए

दर्द का प्रबंधन (पेन मैनेजमेंट) करने की विशेष क्षमता शरीर को प्राप्त हो जाती है। कोई भी काम में अच्छा प्रदर्शन होने के कारण कार्यालय या समाज में आदर सम्मान प्राप्त होकर आत्मविश्वास बढ़ जाता है। स्वयं नियंत्रण अच्छा होने के कारण जीवन के रिश्तों में भी मिठास आने लगती है चाहे फिर वो परिवार के सदस्य हो या फिर कार्यालय सहयोगी हो। सब जगह आनंद निर्माण हो जाता है और कभी कोई परेशानी आयी भी तो हम उसका हल निकालने में सफल हो जाते हैं और हमारे आस-पास के लोग भी हमें मदद करने के लिए आगे बढ़ जाते हैं। यह तो बस एक छोटा सा हिस्सा है, ऐसे अनेक लाभ माइंडफुल जिंदगी जीने से एक व्यक्ति को प्राप्त हो सकते हैं।



चित्र स्रोत - <https://www.findyourcalm.uk/mindfulnesscourse>

प्रतिमा स्रोत - <https://www.verywellfamily.com/benefits-of-mindfulness-for-kids-4769017>

सचेत जीवन की कला को अपनाने से बेशक हमारी जिंदगी और सुंदर और आनंद बन जाती है। तो आप भी अपने जीवन में माइंडफुलनेस लाने का प्रयास करेंगे ना ?

अंत में, यह महत्व नहीं रखता कि आपके जीवन में कितने साल थे।

इस सालों में कितना जीवन आपने जिया यह महत्वपूर्ण है।

.....(अब्राहम लिंकन)

बारिश का पूर्वानुमान

श्रीमती मीरा उमाशंकर, मौवि-ए
मौसम पूर्वानुमान समूह

बारिश के पूर्वानुमान के लिए अलग-अलग लोग अलग-अलग प्रतिक्रियाएं देते हैं। पांच साल का बच्चा अपनी खिड़की से बारिश को गिरते हुए देखना चाहता है, वहीं दस साल का एक बच्चा खुश है कि उसे स्कूल जाने की जरूरत नहीं है। एक चौदह साल के युवा या युवती बाहर घूमने की अपनी योजना से निराश है जबकि बीस साल की लड़की प्रकृति का आनंद ले रही है। एक पच्चीस साल का व्यक्ति इस समय का आनंद लेने के लिए किसी को अपने साथ होने की ख्वाइश रखता है, एक पैंतीस वर्षीय आदमी रात में पार्टी करने के लिए उत्साहित है। एक चालीस वर्षीय औरत अपने गीले कपड़ों को सुखाने को लेकर चिंतित रहती है जबकि उसका पति घर पर गर्म चाय के साथ नाश्ता करके खुश है। एक साठ साल का बूढ़ा गीले फर्श पर चलने से डरता है जबकि एक सत्तर साल का बूढ़ा सिर्फ आसमान और बारिश को बेतहाशा देखकर अपनी पुरानी यादों को ताजा कर रहा है। एक अस्सी साल का व्यक्ति ठंडी से निराश है कि वह बाहर टहलने भी नहीं जा सकता क्योंकि वह जो महसूस कर रहा है उस पर बात करने के लिए उसके पास कोई साथी नहीं है।

ऐसे लोगों के बीच में अलग वर्ग है। उन्हें गर्व है, उनके चेहरे पर मुस्कान है, जो खामोशी के बावजूद सब कुछ बोल देती है।

वह कहता है, "हमारी भविष्यवाणी सच हो गई है"।

पंख नहीं पर उड़ती हूँ
हाथ नहीं पर लड़ती हूँ।



उत्तर - पतंग

अंडमान और निकोबार के लिए मानसून की घोषणा कैसे करते हैं ?

श्रीमती पी.पी.कुलकर्णी, वैज्ञानिक सहायक
और डॉ. अनुपम काश्यपि, वैज्ञानिक - एफ
मौसम पूर्वानुमान समूह

मानसून का आगमन हमारे भारत देश के लिए यह खुशी का संदेश लेके आता है क्योंकि मानसून से जो बारिश मिलती है उसका खरीफ खेती के लिए बहुत फायदा होता है। मानसून अंडमान-निकोबार होते हुए केरल की मुख्य भूमि को दस्तक देता है।

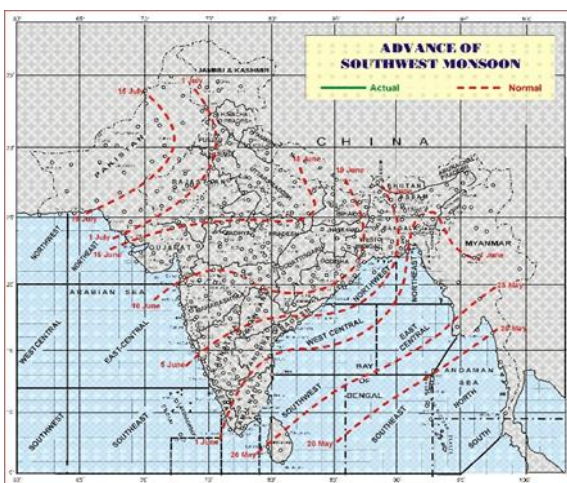
मानसून भूमि और महासागर में भिन्न तापमान प्रवृत्तियों के कारण होता है। भारत में, दक्षिण-पश्चिम ग्रीष्म मानसून एक कम दबाव वाले क्षेत्र से आकर्षित होता है जो गर्मियों के दौरान राजस्थान और आस-पास के क्षेत्रों, थार रेगिस्तान की अत्यधिक गर्मी के कारण होता है। मानसून के दौरान हवा की दिशा उलट जाती है।

भारत में वास्तव में दो प्रकार के मानसून होते हैं।

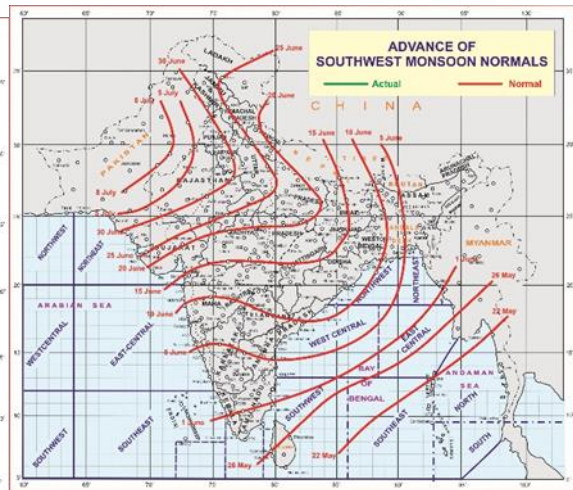
1. दक्षिण-पश्चिम मानसून (कालावधि जून से सितम्बर) और
2. उत्तर-पूर्व मानसून (कालावधि अक्टूबर से दिसम्बर)

दक्षिण पश्चिम मानसून, जो मुख्य मानसून है, समुद्र से आता है और जून की शुरुआत में भारत के पश्चिमी तट पर अपना रास्ता बनाना शुरू कर देता है। जुलाई के मध्य तक देश का अधिकांश भाग वर्षा से ढक जाता है।

दक्षिण पश्चिम मानसून का मौसम जून से सितम्बर की अवधि को दक्षिण-पश्चिम मानसून कहा जाता है। दक्षिण-पश्चिम मानसून अवधि भारतीय उपमहाद्वीप के लिए प्रमुख वर्षा ऋतु है। जिसके दो मुख्य हिस्से हैं अरब सागर वाला और बंगाल की खाड़ी वाला हिस्सा।



चित्र अ: मानसून की सामान्य रेखा के बाद



चित्र आ: मानसून की सामान्य रेखा (उत्तरी सीमा) २०२० (उत्तरी सीमा) २०१९ तक

ऊपर दिया गया चित्र यह दर्शाता है कि अंडमान और निकोबार में मानसून कब दस्तक देता है ?

द्वीप समूह पर दक्षिणी पश्चिमी मानसून के आने की घोषणा करने का वस्तुपूरक मानदंड के समूह को प्रतिपादित करने के लिए दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के आगे बढ़ने से जुड़े विभिन्न मौसम वैज्ञानिक प्राचलों की जांच की गई है। वस्तुपूरक मानदंड को अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर प्रेक्षित की गई प्रतिदिन की वर्षा की मात्रा वितरण का विश्लेषण करते हुए विकसित किया गया है। 1980-2013 की अवधि के लिए ग्रिड पॉइंट बॉक्स (अक्षांश 0 से 15⁰पूर्व) के भीतर बंगाल की खाड़ी पर बहिर्गामी दीर्घ तरंग विकिरण (OLR) और पवनम के विभिन्न स्तरों NCEP/NCA दैनिक माध्य का पुनः विश्लेषण किया गया। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह पर दक्षिण-पश्चिम मानसून के आरंभ होने की घोषणा करने के लिए निम्नलिखित मानदंड को अपनाया गया। अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के आगे बढ़ने की तारीख बशर्ते 5 मई के बाद घोषित की जा सकती है।

- (अ) द्वीप समूह में इस दिन से पहले और इस दिन वर्षा की मात्रा का वितरण काफी व्यापक रूप से हो अथाव वर्षा दूर-दूर तक हुई हो।
- (आ) निकोबार द्वीप समूह सहित बंगाल की खाड़ी के दक्षिण पूर्व पवन की गति का यू-कंपोनेंट 925 हैक्टापास्कल, 8mps(15 नॉट्स) हो या अधिक हो।
- (इ) निकोबार द्वीप समूह सहित बंगाल की खाड़ी के दक्षिण पूर्व वेस्टरलीज की गहराई उस दिन 600 हैक्टापास्कल हो।
- (ई) निकोबार द्वीप समूह सहित बंगाल की खाड़ी के दक्षिण पूर्व उस दिन या उसके पहले दिन बहिर्गामी दीर्घ तरंग 210 watt/m²हो या कम हो।
- (उ) हालांकि बंगाल की खाड़ी में निम्नदाब तंत्र के बनने के कारण द्वीपों में लगातार दो दिन तक काफी विस्तृत वर्षा होती है जो अंडमान निकोबार द्वीप समूह में दक्षिण पश्चिम मानसून के आगमन की घोषणा करने के लिए स्थिति उत्पन्न होती है।
- (ऊ) इस क्षेत्र में मानसून की शुरुआत के लिए कम से कम तीन मानदंडों पर विचार किया जाता है।

यह देखा गया है कि हर साल अंडमान निकोबार में मानसून का दस्तक थोड़ा-थोड़ा परिवर्तित समय में होता है।

टेबल - 1 में इसका विवरण दिया गया है।

टेबल 1 अंडमान और निकोबार में अब तक मानसून का आगमन

वर्ष	नॉर्मल तारीख	आगमन	वर्ष	नॉर्मल तारीख	आगमन	वर्ष	नॉर्मल तारीख	आगमन
1960	20 मई	14 मई	1982	20 मई	25 मई	2004	20 मई	13 मई
1961		21 मई	1983		27 मई	2005		26 मई
1962		14 मई	1984		31 मई	2006		17 मई
1963		3 जून	1985		22 मई	2007		10 मई
1964		25 मई	1986		20 मई	2008		10 मई
1965		26 मई	1987		29 मई	2009		20 मई
1966		27 मई	1988		10 मई	2010		17 मई
1967		13 जून	1989		18 मई	2011		25 मई
1968		5 जून	1990		18 मई	2012		23 मई
1969		16 मई	1991		24 मई	2013		17 मई
1970		18 मई	1992		20 मई	2014		18 मई
1971		31 मई	1993		17 मई	2015		16 मई
1972		23 मई	1994		21 मई	2016		18 मई
1973		28 मई	1995		14 मई	2017		14 मई
1974		23 मई	1996		17 मई	2018		25 मई
1975		22 मई	1997		16 मई	2019		18 मई
1976		24 मई	1998		15 मई	2020		17 मई
1977		16 मई	1999		20 मई	2021		21 मई
1978		15 मई	2000		15 मई	2022		16 मई
1979		25 मई	2001		15 मई			
1980		21 मई	2002		14 मई			
1981		18 मई	2003		16 मई			

निष्कर्ष:

टेबल 1 के अध्ययन से यह सूचित होता है कि 1988 में सबसे जल्दी 10 मई को मानसून ने दस्तक दी थी। 1967 में सबसे देर 13 जून को मानसून का आगमन हुआ था। जब कि द्वीपों में मानसून की सामान्य तारीख 2020 तक 20 मई थी। अभी जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून की सामान्य तारीख 22 मई हो चुकी है। यह अध्ययन इसलिए जरूरी है कि मानसून के आगमन की सूचना केरल भूमि से होते हुए पूरे भारत के राज्यों में दी जा सकती है।

सोशल मीडिया के प्रभाव, इसके अधिकार में संतुलन एवं विनियमन की आवश्यकता

श्रीमती संध्या रविकिरण, मौसम विज्ञानी - बी
मौसम विज्ञान प्रशिक्षण संस्थान, पुणे

वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र का एक अहम पहलू है। इस अधिकार के उपयोग के लिए सोशल मीडिया ने जो अवसर नागरिकों को दिये हैं, एक दशक पूर्व उनकी कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। दरअसल, इस मंच के ज़रिये समाज में बदलाव की बयार लाई जा सकती है। लेकिन, चिंता का विषय है कि मौजूदा वक्त में सोशल मीडिया अपनी आलोचनाओं के लिए चर्चा में रहता है। दरअसल, सोशल मीडिया की भूमिका सामाजिक समरसता को बिगाड़ने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बांटने वाली सोच को बढ़ावा देने वाली हो गई है। कुछ दिन पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अफ्रीकी-अमेरिकी युवक की मृत्यु के बाद बड़े पैमाने पर हिंसक विरोध प्रदर्शन का दौर प्रारंभ हो गया। यह हिंसक विरोध प्रदर्शन स्वतः परंतु सोशल मीडिया द्वारा विनियोजित था। हमने पूर्व में अरब की सड़कों पर शुरु हुए प्रदर्शनों (जिसने कई तानाशाहों की सत्ता को चुनौती दी) में भी सोशल मीडिया के व्यापक प्रभाव का अनुभव किया है। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने विचारों को एक-दूसरे के साथ साझा कर एक नई बौद्धिक दुनिया का निर्माण कर रहे हैं।

- सोशल मीडिया के ज़रिये अफवाह फैलाकर लोगों को भीड़ द्वारा मार देने की घटनाएं आम हो गई हैं। हालिया दिनों में देश भर में तीस से ज्यादा हत्याएं भीड़ द्वारा की गई हैं। इनमें अधिकतर हत्याएं सोशल मीडिया पर बच्चा चोर की अफवाह फैलने की वजह से हुई हैं।
- कर्नाटक में बच्चा चोरी के शक में एक इंजीनियर की हत्या का मामला सामने आया था। असम में घूमने निकले दो युवकों को बच्चा चोर समझ कर मार दिया गया था। मध्य प्रदेश के सिंगरौली में एक महिला को बच्चा चोर समझ कर मार डाला गया।
- इसके अलावा, असम, महाराष्ट्र, झारखंड, तमिलनाडु जैसे राज्यों में भी ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया गया।

ऐसे में सवाल यह उठता है कि जिस सोशल मीडिया को जानकारी साझा करने और नवाचार का अहम मंच समझा गया, वह आज लोगों की मौत की वजह क्यों बन रहा है? एक ऐसे समय में जब देश के कई हिस्सों से धार्मिक सद्भावना बिगड़ने की खबरें आ रही हैं तब सोशल मीडिया एक सकारात्मक और रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। लेकिन, यह चिंता का विषय है कि ऐसा नहीं हो पा रहा। आइये, इन्हें पहलुओं की पड़ताल करते हैं।

सोशल मीडिया का समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव

➤ सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

- सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण साधन है और इसने विश्व में संचार को नया आयाम दिया है।
- सोशल मीडिया उन लोगों की आवाज़ बन सकता है जो समाज की मुख्य धारा से अलग हैं और जिनकी आवाज़ को दबाया जाता रहा है।

- वर्तमान में सोशल मीडिया कई व्यवसायियों के लिए व्यवसाय के एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर रहा है ।
 - सोशल मीडिया के साथ ही कई प्रकार के रोज़गार भी पैदा हुए हैं ।
 - वर्तमान में आम नागरिकों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए सोशल मिडिया को प्रयोग काफी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है ।
 - कई शोधों में सामने आया है कि दुनिया भर में अधिकांश लोग रोज़मर्रा की सूचनाएं सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं ।
- **सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव**
- कई शोध बताते हैं कि यदि कोई सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है ।
 - सोशल मीडिया साइबर -बुलिंग को बढ़ावा देता है ।
 - यह फेक न्यूज़ और हेट स्पीच फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।
 - सोशल मीडिया पर गोपनीयता की कमी होती है और कई बार आपका निजी डेटा चोरी होने का खतरा रहता है ।
 - साइबर अपराधों जैसे हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा भी बढ़ जाता है ।
 - आजकल सोशल मीडिया के माध्यम से धोखाधड़ी का चलन भी काफी बढ़ गया है, ये लोग ऐसे सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की तलाश करते हैं जिन्हें आसानी से फँसाया जा सकता है ।
 - सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है ।
- ❖ **सोशल मीडिया और भारत**
- सोशल मीडिया ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी समाज की मुख्य धारा में जुड़ने और खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है ।
 - आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में भारत में तकरीबन 350 मिलियन सोशल मीडिया यूज़र हैं और अनुमान के मुताबिक, वर्ष 2023 तक यह संख्या लगभग 447 मिलियन तक पहुंच जाएगी ।
 - वर्ष 2019 में जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय उपयोगकर्ता औसतन 2.4 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं । - इसी रिपोर्ट के मुताबिक फिलीपींस के उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का सबसे अधिक (औसतन 4 घंटे) प्रयोग करते हैं, जबकि इस आधार पर जापान में सबसे कम (45 मिनट) सोशल मीडिया का प्रयोग होता है ।
 - इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया अपनी आलोचनाओं के कारण भी चर्चा में रहता है । दरअसल, सोशल मीडिया की भूमिका सामाजिक समरसता को बिगाड़ने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बांटने वाली सोच को बढ़ावा देने वाली हो गई है ।

- भारत में नीति निर्माताओं के समक्ष सोशल मीडिया के दुरुपयोग को नियंत्रित करना ही बड़ी चुनौती बन चुकी है एवं लोगों द्वारा इस ओर गंभीरता से विचार किया जा रहा है।

सोशल मीडिया का दुरुपयोग

- फेसबुक, ट्विटर समेत कई साइटों पर आपत्तिजनक सामग्रियां मिलने की शिकायतें आए दिन प्राप्त होते रहती हैं। अभी तक फेसबुक ने सबसे अधिक आपत्तिजनक सामग्रियों को हटाया है। इनमें ज्यादातर वे कंटेंट्स थे जो धार्मिक भावनाएं और राष्ट्रीय प्रतीकों के अपमान का निषेध करने वाले कानूनों का उल्लंघन करते थे। इतनी कम अवधि में बड़ी संख्या में आपत्तिजनक कंटेंट्स का पाया जाना यह बताता है कि सोशल मीडिया का कितना बड़ा दुरुपयोग हो रहा है।
- एक अनुमान के मुताबिक, हर 40 मिनट में फेसबुक से संबंधित एक पोस्ट को हटाने की रिपोर्ट की जाती है। दरअसल, अधिकतर व्यक्ति बिना सोचे-समझे ही किसी भी पोस्ट को साझा कर देते हैं। व्हाट्सएप और फेसबुक पर कई सोशल ग्रुप बने होते हैं। अक्सर ये ग्रुप किसी विचारधारा से प्रेरित होते हैं या किसी खास मकसद से बनाए जाते हैं। अगर यह कहा जाए कि अधिकतर ग्रुप्स राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित होते हैं तो, गलत नहीं होगा। यहाँ बिना किसी रोक-टोक के धड़ल्ले से फेक न्यूज़ बनाए और साझा किए जाते हैं। जाहिर है ये न्यूज़ किसी खास भावना या मकसद से तैयार किये जाते होंगे। फिर यह कहना गलत नहीं होगा कि सामाजिक सौहार्द के सामने सोशल मीडिया एक चुनौती बन कर खड़ा है।
- दूसरी तरफ, सोशल मीडिया के ज़रिये ऐतिहासिक तथ्यों को भी तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। न केवल ऐतिहासिक घटनाओं को अलग रूप में पेश करने की कोशिश हो रही है बल्कि, आजादी के सूत्रधार रहे नेताओं के बारे में भी गलत जानकारियां बड़े स्तर पर साझा की जा रही है।
- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरु के बारे में अनेक भ्रान्तियां फैलाना इसी का एक पहलू है। मुमकिन है कि राजनीतिक फायदा हासिल करने के लिए ऐसा किया जा रहा हो।
- विश्व आर्थिक मंच ने भी अपनी जोखिम रिपोर्ट में बताया है कि सोशल मीडिया के ज़रिये झूठी सूचना का प्रसार उभरते जोखिमों में से एक है। लेकिन, सवाल है कि एक प्रगतिशील समाज और देश के लिए यह कितना उचित है कि वह आए दिन गलत सूचनाओं को बनाए और साझा करे? यकीनन, यह न केवल हमारी प्रगति की राह में रुकावट है बल्कि, हमारे प्रगतिशील होने के दावों पर भी सवालिया निशान लगाता है। ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि हमारी सरकारें इसमें दखल दें और इस पर लगाम लगाने की भरसक कोशिश करें।

सोशल मीडिया और फेक न्यूज़ संबंधी नियम कानून

- भारत में सोशल मीडिया प्लेटफार्म पहले से ही सूचना प्रौद्योगिकी (IT) अधिनियम, 2008 के दायरे में आते हैं।
- यदि सोशल मीडिया प्लेटफार्म को अदालत या कानून प्रवर्तन संस्थाओं द्वारा किसी सामग्री को हटाने का आदेश दिया जाता है तो उन्हें अनिवार्य रूप से ऐसा करना होगा।

- सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर रिपोर्टिंग तंत्र भी मौजूद हैं, जो यह पता लगाने का प्रयास करते हैं कि क्या कोई सामग्री सामुदायिक दिशा-निर्देशों का उल्लंघन कर रही है या नहीं और यदि वह ऐसा करते हुए पाई जाती है तो उसे प्लेटफार्म से हटा दिया जाता है ।
- भारत में फेक न्यूज़ को रोकने के लिए कोई विशेष कानून नहीं है । परंतु भारत में अनेक संस्थाएं हैं जो इस संदर्भ में कार्य कर रही हैं
 - प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया: एक ऐसी ही नियामक संस्था है जो समाचार पत्र, समाचार एजेंसी और उनके संपादकों को उस स्थिति में चेतावनी दे सकती है यदि यह पाया जाता है कि उन्होंने पत्रकारिता के सिद्धांतों का उल्लंघन किया है ।
 - न्यूज़ ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन: निजी टेलीविजन समाचार और और करेंट अफेयर्स के प्रसारकों का प्रतिनिधित्व करता है एवं उनके विरुद्ध शिकायतों की जांच करता है ।
 - ब्रॉडकास्टिंग कंटेंट कंप्लेट काउंसिल: टीवी ब्राडकास्टर्स के खिलाफ आपत्तिजनक टीवी कंटेंट और फर्जी खबरों की शिकायत स्वीकार करती है और उनकी जांच करती है।

सोशल मीडिया और निजता का मुद्दा

- वर्तमान परिदृश्य भारत को डिजिटल सेवाओं के लिए एक नवीन डिजाइन तैयार करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करते हैं, जिसमें व्यक्तिगत और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों का समावेश हो ।
- निजता संरक्षण, डेटा संरक्षण से जुड़ा विषय है क्योंकि जब कोई व्यक्ति किसी डिजिटल पहचान द्वारा इंटरनेट माध्यम का प्रयोग करता है तो उस दौरान विभिन्न डाटाओं का संग्रह तैयार हो जाता है जिससे बड़ी आसानी से उपयोगकर्ता के निजी डेटा को प्राप्त किया जा सकता है ।
- अतः डेटा संरक्षण ढाँचे के डिजाइन में महत्वपूर्ण चुनौती डिजिटलीकरण के उपयोग से दीर्घकालिक रिकॉर्ड को सुरक्षित रखना तथा इसके साथ ही गोपनीयता को बनाए रखना भी है।
- भारत में प्रभावी डेटा संरक्षण के लिए डेटा नियामकों के पदानुक्रम और एक मजबूत नियामक ढाँचे की आवश्यकता होगी, जो डेटा डिजिटल सेटअप और आम सहमति के अलावा हमारे मूल अधिकारों की रक्षा कर सके ।

आगे की राह

सोशल मीडिया के दुरुपयोग का मुद्दा ऐसा है कि जिसकी अब अनदेखी नहीं की जा सकती है । गलत विचारों को साझा करने से देश की आंतरिक सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है । ऐसे में इसके खिलाफ कड़े कानून की सख्त जरूरत है ।

- देश जैसे-जैसे आधुनिकीकरण के रास्ते पर बढ़ रहा है चुनौतियां भी बढ़ती ही जा रही हैं। लिहाज़ा, भारत को जर्मनी जैसे उस कठोर कानून की जरूरत है जो सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक सामग्री का इस्तेमाल करने वालों पर शिकंजा कसने के लिए बनाया गया है।
- हालांकि भारत भी इस तरफ अपना कदम बढ़ा चुका है लेकिन देखने वाली बात होगी कि यह कितना कारगर साबित हो सकता है ।
- जर्मनी में यह भी प्रावधान है कि कंपनियों को हर 6 महीने बाद सार्वजनिक रूप से बताना होगा कि उन्हें कितनी शिकायतें मिली और उन पर किस प्रकार संज्ञान लिया गया । इसके अलावा,

उन्हें उस यूजर की पहचान भी बतानी होगी, जिसपर लोगों की मानहानि या गोपनीयता भंग करने का रोप लगाया गया है। जानकारों का मानना है कि यह कानून लोकतांत्रिक देशों में अब तक का सबसे कठोर कानून है।

- इसके अलावा, 'सोशल मीडिया इंटेलीजेंस' के जरिये सोशल मीडिया गतिविधियों का विश्लेषण करते रहना और शिकायत पर उचित कार्रवाई करना भी एक उपाय हो सकता है। इससे आपत्तिजनक सामग्रियों को बिना देर किए ही हटाया जा सकेगा। सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा मिलकर जागरूकता संबंधी कार्यक्रम और सेमिनार का आयोजन कर भी इस समस्या पर अकुश लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष

हमें समझना होगा कि ग्रामीण इलाकों में पगडंडियों के सहारे नदियों को पार कर बच्चे देश की साक्षरता दर बढ़ाने के लिए पढ़ने जाते हैं, देश के अलग-अलग कोने में मज़दूर वर्ग देश की जीडीपी को बढ़ाने के लिए मेहनत करते हैं। लेकिन हम लोग संकीर्ण मानसिकता के कारण उन बच्चों और मज़दूरों की मेहनत पर पानी फेर देते हैं। सुविधाओं से लैस घरों में बैठे-बैठे ही हम देश में नफरत के बीज बो रहे हैं। आपसी भाई-चारे को खत्म कर हम देश के लिये चुनौती बन रहे हैं। पिछले साल भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान ग्वालियर के अध्ययन में बताया गया है कि भारत आने वाले 89 फीसदी पर्यटक सोशल मीडिया के जरिये ही भारत के बारे में जानकारियां प्राप्त करते हैं। यहाँ तक कि इनमें से 18 फीसदी लोग तो भारत आने की योजना ही तब बनाते हैं जब सोशल मीडिया से प्राप्त सामग्री इनके जहन में भारत की अच्छी तस्वीर पेश करती है। ऐसे में यदि सोशल मीडिया के जरिये भारत की नकारात्मक छवि सामने आती है तो इससे आर्थिक नुकसान के साथ-साथ भारत की प्रतिष्ठा भी दाँव पर लगेगी। इसलिये यह जरूरी है कि हम देशहित को प्राथमिकता दें और सोशल मीडिया का बेहतर तरीके से प्रयोग कर दुनिया के सामने भारत की बेहतर तस्वीर पेश करें ताकि आने वाली पीढ़ी को हम एक अनुशासित और साफ-सुथरा माहौल मुहैया करा सकें।

हमारे भारत के गांवों के अद्भूत, अनोखे तथ्य

श्रीमती सुनिता भंडारी, मौसम विज्ञानी - बी

एमटीआई, पुणे

1. मत्तूर (कर्नाटक) - दिन-प्रतिदिन के कार्यों सहित सभी कार्यों के लिए 'संस्कृत' भाषा के अनिवार्य उपयोग वाला एक गांव ।
2. मौलिनोंग (मेघालय) - एशिया का सबसे स्वच्छ गांव । एक छोटी सी चट्टान जो पर्यटकों को आकर्षित करती है । विशालकाय पत्थर की प्राकृतिक मूर्तिकला ।
3. कुलधरा (राजस्थान) - 'अनिवासी' गांव । गांव में कोई नहीं रहता है । घरों को निराश्रित छोड़ दिया जाता है ।
4. कोडिन्ही (केरल) - जुड़वां का गांव । लगभग हर घर में जुड़वां ।
5. कोरले गांव, रायगढ जिला (महाराष्ट्र) - आजादी के बाद पुर्तगालियों के जाने के बाद भी गांव अभी भी दैनिक जीवन में 'पुर्तगाली' भाषा का उपयोग करता है ।
6. माधोपट्टी ग्राम (उत्तर प्रदेश) - भारत के एक गांव के 46 से अधिक आईएएस/IAS वाले गांव ने देखा है कि गांव 90 प्रतिशत से अधिक सरकारी नौकरियों में प्रथम श्रेणी के अधिकारी प्रदान करता है ।
7. झुंझानू (राजस्थान) - सैनिकों का गांव, एक घर से तीन से चार जवान, पांच-पांच पीढ़ियों से हर घर में सिपाही, देश की असली सेवा यही गांव और गांव का हर व्यक्ति देश के विभिन्न हिस्सों में 6,000 से अधिक सेवानिवृत्त और 11,000 सैन्यकर्मों कार्यरत हैं ।
8. शिव नगर (उत्तर प्रदेश) - मुजफ्फरनगर के शिव नगर गांव का नाम बदलकर स्नैपडील डॉट कॉम नगर कर दिया गया, स्नैपडील डॉट कॉम के बाद, ई-कॉमर्स कंपनी ने गांव के 15 हैंड-पंप लगाए ताकि ग्रामीणों को पानी लाने के लिए मीलों पैदल न चलना पड़े । गांव में स्नैप डील का लोगो हर जगह ब्रांडेड है ।
9. नवापुर (महाराष्ट्र) - नवापुर रेलवे स्टेशन आधा गुजरात में और आधा महाराष्ट्र में है ।
10. आलंदी (महाराष्ट्र) - गांव को आज भी मांस और मटन नहीं मिले 700 साल हो गए हैं।
11. सोलापुर (महाराष्ट्र) - जिले के शेटफल गांव के हर घर में आपको सांपों के साथ रहने वाले सांप को घूमते हुए देखा जाएगा और आज तक किसी भी व्यक्ति को सांप ने नहीं छीना है ।
12. रोंगदोई (असम) - मानना है कि मेंढकों की शादी पर बारिश शुरू होती है । ऐसी शादी को गांव के त्योहार के रूप में मनाया जाता है ।
13. बरवांकला (बिहार) - अविवाहितों का गांव । पिछले 50 वर्षों से गांव में शादियां नहीं हुई है ।

14. जंबूर (गुजरात) - सभी नागरिक, हालांकि भारतीय मूल के हैं। अफ्रीकी की तरह लगते हैं। इसलिए इस गांव को अफ्रीकी गांव के रूप में पहचाना जाता है।
15. हिवरे बाजार (महाराष्ट्र) - भारत में सबसे 'अमीर' गांव। 60 अरबपति घर। कोई 'गरीब' नहीं है। इस गांव की उच्चतम सकल घरेलू उत्पाद (GDP) वाला गांव माना जाता है।
16. पंसारी (गुजरात) - भारत का सबसे 'आधुनिक' गांव। गांव के सभी घरों में सीसीटीवी लगे हैं। वाई-फाई की सुविधा भी उपलब्ध है। गांव के सभी पाथलैम्प सौर ऊर्जा से चलते हैं।
17. वाराणसी (उत्तर प्रदेश) - 5000 साल पुराना पवित्र शहर वाराणसी, जिसे बनारस या काशी के नाम से भी जाना जाता है, को दुनिया के सबसे पुराने जीवित शहरों में से एक माना जाता है। वाराणसी को आयुर्वेद और योग और उनकी प्राचीन चिकित्सा प्रणालियों के जन्म स्थान के रूप में भी जाना जाता है।
18. बकतावंग (मिजोरम) - मिजोरम के बकतावंग गांव में अपनी 100 कमरों की हवेली में दुनिया का सबसे बड़ा परिवार रहता है, श्री जिओना चाना सबसे बड़े परिवार के मुखिया है, जिसमें 181 सदस्य हैं। उनकी 39 पत्नियां, 94 बच्चे, 14 बहुएं और 33 पोते-पोतियां हैं।
19. शनिशिगनापुर (महाराष्ट्र) - पुरे गांव में एक भी घर में कोई कुंडी नहीं। कोई चोरी नहीं होती।
20. आगरा (उत्तर प्रदेश) - द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ताजमहल इमारत की सुरक्षा के लिए पूरे महर को बांस के मचान से ढक दिया गया था, जो पूरी तरह से ऊपर उड़ने वाले बमवर्षक विमानों से असली संरचना को छुपा रहा था। तरकीब काम कर गई क्योंकि युद्ध के दौरान ताजमहल पर कभी हमला नहीं हुआ था।

“हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्र निर्माण का प्रश्न है”

न भोजन खाता, न वेतन लेता
फिर भी पहरा डट कर देता






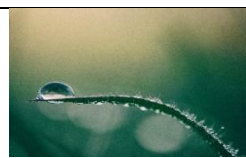


उत्तर - ताला

अर्थ भिन्न लिपि समान

श्रीमती अपर्णा खेडकर,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
प्रशासन समूह

‘भाषा’ यह शब्द मूल रूप से संस्कृत भाषा से लिया हुआ है। संस्कृत भाषा के अनुसार ‘भाषा’ शब्द की व्याख्या “बोलना” बताया जाता है। भाषा यह अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा संप्रेषण का साधन है। सभी भाषा के नियम होते हैं और एक दूसरे के साथ जब विचारों का विनिमय होता है तो भाषा ही माध्यम होता है। सभी भाषाओं का उच्चारण और बोलने का एक तरीका होता है। अलग अलग प्रांतों में एक ही भाषा का अपने तरीके से बोला जाता है, उदाहरण - भारत के कई हिस्सों में हिंदी बोलने के अलग तरीके पाए जाते हैं, उत्तर प्रदेश के कई भागों में हिंदी को भोजपुरी, मगधी के साथ बोला जाता है जबकि दिल्ली में अवधि हिंदी में साथ ही पंजाबी और हरयाणवी के कई अंश साफ सुनाई पड़ते हैं।

हिंदी और मराठी इन दोनों भाषाओं की लिपि देवनागरी हैं। दोनों में शब्द एक जैसे हैं और उच्चारण भी एक समान है परंतु अर्थ भिन्न हैं। हर भाषा की एक विशेषता होती है जिससे हम उस भाषा को पहचान सकें। हिंदी और मराठी में ऐसे कई शब्द हैं जिनकी लिपि और उच्चारण में कोई फरक नहीं होता परंतु उनका अर्थ भिन्न होता है - उदाहरण: “लहर” शब्द हिंदी और मराठी में पाया जाता है हिंदी में लहर इस शब्द को ‘तरंग’ से जोड़ा जाता है जबकि मराठी भाषा में लहर शब्द का अर्थ ‘आवेग’ शब्द से मेल खाता है। इन शब्दों में भाषा की मिठास दिखाई पड़ती है और लहर जैसे कई उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत करती हूँ।

मराठी शब्द	मराठी में अर्थ	हिंदी शब्द	हिन्दी में अर्थ
सही	 Signature	सही	 CORRECT
ओस	 Barren land	ओस	 Dew
घास	 Morsel	घास	 Grass

खोल	 Deep	खोल	 Open
शिक्षा	 Punishment	शिक्षा	 Education
खत	 Fertilizer	खत	 Letter
साल	 Skin	साल	 Year
ऊन	 Sunlight	ऊन	 Wool
साथ	 Epidemic	साथ	 Companionship
पीठ	 Flour	पीठ	 Back
घडी	 Fold	घड़ी	 Watch

नाव	 Name	नाव	 Boat
भारी	 Great	भारी	 Heavy
कुन्डी	 Pot	कुन्डी	 Bolt
खडा	 Pebbles	खड़ा	 Stand
चेष्टा	 Fun/Joke	चेष्टा	 Try/Effort
मूल	 Child	मूल	 Roots
भूल	 Anaesthesia	भूल	 mistake
मोड	 Sprouts	मोड़	 Turn

मूली	 Girls	मूली	 Raddish
चक्का	 A kind of Cheese	चक्का	 Wheel
जाडा	 Thick	जाड़ा	 Winter

एक ही माता की दो पुत्रियों से जिस प्रकार से भिन्नताएं प्रस्तुत करती है इसी प्रकार जननी संस्कृत भाषा की दो पुत्रियां हिंदी और मराठी की भिन्नताएं उपरोक्त शब्दों में आपने पढ़ी ।

यही है भाषा की सौंदर्यता एक जननी से उत्पत्ती होकर अपनी अलग विशेषताएं रखती है और अपनी अलग पहचान बनाती है ।

मैं मरती हूँ, मैं कटती हूँ,
पर रोते हो तुम, पहचानों कौन हूँ मैं ।



उत्तर - प्याज ।

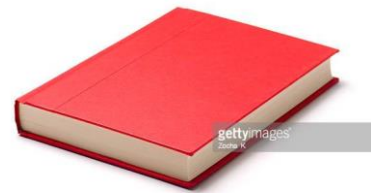
shutterstock.com · 1684863088

आहुती

हरिष देशमुख, सहायक
प्रशासन अनुभाग, जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं

राख तर होणारच आहे हे शरीर,
म्हणून का स्वतःला पेटवून घ्यावे.
जन्माला आलो आहेच तर,
का नाही, आहुती होऊन जगावे.
असेल किती हा अंधार हा भयावह,
असेल किती काळ शक्तिशाली,
तुपाची धार बनून हवनात पडावे,
स्वतःच्या प्रकाशात उजळून जावे.
हार मानून खचून का जावे,
आहे श्वास तो पर्यंत आयुष्य जगावे,
झिजावे परी चंदनासारखे,
आणी सुगंध आपला उधळत जालवे.

बोल नहीं पाती हूँ मैं,
और सुन नहीं पाती ।
बिना आँखों के हूँ अंधी,
पर सबको राह दिखाती हूँ ।



उत्तर - पुस्तक

महाराष्ट्राची संगीत परंपरा - मराठी मातीचे गायन

सुनिता भंडारी, मौसम विज्ञानी - बी,
एमटीआई, पुणे

आपल्या देशाच्या प्रत्येक प्रदेशाची प्रादेशिक अशी समृद्ध परंपरागत संगीताची एक वेगळी परंपरा आहे. महाराष्ट्रही त्याला अपवाद नाही. महाराष्ट्राची भूमी राकट देशा, कणखर देशा महाराष्ट्र देशा म्हणून ओळखली जाते. महाराष्ट्राला संगीताचा खूप मोठा आणि समृद्ध असा वारसा लाभला आहे. आधुनिक काळातील काही श्रेष्ठ शास्त्रीय गायकांनी उदाहरणार्थ पंडित भीमसेन जोशी, श्रीमती किशोरी अमोणकर, लता मंगेशकर यांच्यासारख्या कितीकांनी महाराष्ट्राला संगीताच्या दरबारात अतिशय मानाचे स्थान मिळवून दिले. महाराष्ट्रातील लोकसंगीत परंपरा, लोकसंगीतातील वाद्ये, महाकाव्यांची लोककलांमधील रूपे हा संगीतप्रेमींसाठी मोठ्या संशोधनाचा व कुतुहलाचा विषय आहे. राज्याच्या सांगीतिक इतिहासामध्ये हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, नाट्यसंगीत, आणि संतांच्या उपदेशपर भक्ति रचना (भजन), भाव-गीत असे संगीताचे प्रमुख लोकप्रिय प्रकार आपल्याला दिसून येतात.

महाराष्ट्राचा संगीत इतिहास



महाराष्ट्राला देवगिरीच्या यादव (1187-1317) ई.स. वंशापासून संगीताचा वारसा लाभलेला आहे कारण तेव्हा पासून दरबारात गाण्याची परंपरा चालू झालेली दिसून येते. पुढे जाऊन सिंधण राजाच्या दरबारात (1210-47) सोढळ नावाचा काश्मिरी पंडित हा तेथील महसूल खात्याचा अमात्य एक संगीतज्ञ होता. शिवाजी राजांच्या कालखंडानंतर नानासाहेब पेशवेच्या दरबारात नारो अप्पाजी भावे हे प्रसिद्ध सतारवादक होऊन गेले. त्यांनी खुशालखा हे धृपदीये (धृपद संगीत प्रकार गाणारे) संगीत क्षेत्रात आणले होते. पेशवाईला उतरती कळा लागल्यानंतर पोवाडा व लवणी या गानप्रकाराना महाराष्ट्रात वाव मिळाला. दुस-या बाजीराव पेशव्यांच्या कारकिर्दीत लावणी या गायन प्रकाराचा मोठ्या प्रमाणावर प्रसार झाला. भारुड, गोंधळ आणि तमाशात असणारी लावणी आणि पोवाडा यानां त्यावेळी विशेष महत्त्व दिले जात होते. अभिजात संगीत दरबारातून थेट सामान्यांपर्यंत पोचवण्याचे

काम नाट्यसंगीताने केले. संगीत नाटकातील नाट्य संगीताला जवळजवळ 200 वर्षांची परंपरा आहे. भावगीत परंपरेची स्थापनाही फक्त मराठी मातीतच रुजली. याद्वारे आपली उच्च अभिरुची मराठी माणासाने टिकवून ठेवली.

लोकसंगीत

भारतीय अभिजात संगीताचा उगम लोकसंघीतामधूनच झाला. मराठी लोकसंगीत म्हटले की लावणी, पोवाडा, भारुड, गोंधळ, वासुदेवगीते, ओव्या आणि कोळीगीते या संगीत प्रकारांनी महाराष्ट्राच्या खेड्यातील लोकांचे मनोरंजन व महाराष्ट्राला वैभव प्राप्त करून दिले. एकानाथी भारुडांमधे वेगवेगळ्या पारंपारिक खेळांचे रूपक वापरून अतिशय सोप्या भाषेत परंतु गहन अर्थाचे तत्वज्ञान त्यांनी उलगडून दाखविले आहे. भारुड, कीर्तन, शाहिरी, पोवाडा यांनी जबरदस्त लोकजागृतीचे काम केले. भजन, भारुड, गोंधळ, कीर्तन, ललिता, अभंग आणि तुंबडी गायन हे महाराष्ट्रातील लोकगीतांवर आधारित मनोरंजनाचे प्रकार आहेत. या मध्ये सोबतीला एकतारा हे बांबू चर्मपत्र आणि स्टीलपासून बनवलेले एक तंतुवाद्य असेत. मुख्यतः गुणगुणण्याच्या आवाजात म्हणणारे हे पारंपारिक वाद्य आहे. मुख्यतः महाराष्ट्राच्या विविध भागांमध्ये पारंपारिक लोक गायक हे वापरतात. ढोलकी, मंजीरा, तुनतुणी, डफ, हार्मोनियम ही वाद्ये वापरली जातात.



भारुड



लावणी

लावणी हा शब्द मराठीत लावण्य या शब्दापासून बनवला आहे ज्याचा अर्थ सुंदर आणि सौंदर्य आहे. लावणी हे पारंपारिक गाणे आणि नृत्य यांचे संयोजन आहे, जे विशेषतः ढोलकी या तालवाद्याच्या तालावळ सादर केले जाते. लावणी. नृत्य प्रकारात प्रणय, शोकांतिका, राजकारण, समाज इत्यादि अनेक विषय दाखवले जातात. मराठी लोकनाट्याच्या विकासात लावणीने भरीव योगदान दिले आहे.

भालेरी

शेतात काम करणा-या शेतक-यांना आनंद देण्यासाठी भालेरी लोकगीत गायले जाते. कापणीच्या वेळी शेतकरी विशेष, गाणी देखील गातात.

शाहीरी-पोवाडा- पोवाडा गायन प्रकारात शिवाजीचे कर्तृत्व दाखवले जाते.

गोंधळ- गोंधळी रेणुका आणि तुळजाभवानीचे उपासक असतात. त्यावर आधारित रचना ते गावून सेवाभावाचे देवीसमोर सादर करतात.

कोळी नृत्य- हे महाराष्ट्राच्या पश्चिम भागातील सर्वात लोकप्रिय लोकसंगीतांपैकी एक आहे. कोळी गीताला महाराष्ट्रात जवळपास 300 वर्षे जुनी परंपरा आहे.

तमाशा- तमाशा हा मराठी रंगभूमीचा एक पारंपारिक प्रकार आहे, महाराष्ट्र राज्यातील स्थानिक किंवा प्रवासी नाट्य गटांद्वारे गायन आणि नृत्यासह मोठ्या प्रमाणावर हा सादर केला जातो.

सोलापूरच्या धनगरांनी सादर केलेला **धनगरी राजा** नृत्य प्रकार हा देवाला मान देतो. वारक-यांची **दिंडी** आणि **काला** हे सुध्दा धार्मिक लोकनृत्य आहेत, जे भगवान श्रीकृष्णाची/विठ्ठलाची भक्तीगीते सादर करून आनंद व्यक्त करतात.



गोंधळ



पोवाडा



कोळी नृत्य



तमाशा



दिंडी



मराठी नाटकामध्ये नांदीचे सादरीकरण

नाट्य संगीत

मराठी **नाट्यसंगीत** - नाट्यपद हा मराठी नाटक/रंगभूमीचा आणखी एक पारंपारिक संगीत प्रकार आहे. नाट्यसंगीताचे संगीत अतिशय वैविध्यपूर्ण आहे, त्यात भजन, कीर्तन तसेच लावणी सारख्या मराठी लोकसंगीताचे प्रकार व हिंदुस्थानी शास्त्रीय आणि कर्नाटकी संगीताचा पण समावेश होतो. याचा मुख्य भर प्रेक्षकांशी जोडले जाईल आणि त्यांना आनंद होईल असे संगीत निवडण्यावर

असतो. आण्णासाहेव किलोस्कर हे आधुनिक मराठी रंगभूमीचे जनक म्हणून ओळखले जातात., नाट्यसंगीताची परंपरा महाराष्ट्रामध्ये सुरु केली.

महाराष्ट्राचा वैविध्यपूर्ण भौगोलिक भूप्रदेश, महाराष्ट्राच्या लोकसंख्येतील सामाजिक विविधता, महाराष्ट्रतील ऐतिहासिक दृष्ट्या महत्वाच्या घटनांचे प्रतिबिंब या मातीच्या संगीतामधे दिसून येते. शेजारील राज्यांशी सुसंवाद साधणे तसेच राज्याचा आर्थिक आणि सांस्कृतिक उत्क्रांती आणि प्रगतीमध्ये महाराष्ट्रीय संगीत, लोकसंगीताने मोठे योगदान दिले आहे. म्हणुनच प्रत्येक मराठी माणसाला मिळालेल्या या वारसाचा सार्थ अभिमान आहे.

**“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना
देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है”**

जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं कार्यालय, पुणे में दिनांक 1 सितम्बर से 14 सितम्बर 2021 तक आयोजित हिंदी पखवाड़ा की रिपोर्ट

जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं कार्यालय में दिनांक 1 सितम्बर से 14 सितम्बर 2021 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। 1 सितम्बर को पखवाड़ा का शुभारंभ हुआ और 14 सितम्बर को समापन समारोह का आयोजन हुआ।

दिनांक 1 सितम्बर को कार्यालय प्रमुख डॉ. डी.एस. पै महोदय जी ने पखवाड़ा का उद्घाटन किया और सभी को पखवाड़ा में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए कहा और हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। समिति के उपाध्यक्ष डॉ. अनुपम काश्यपि जी ने भी अपने वक्तव्य में सभी से हिंदी पखवाड़े में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए आवाहन किया।

पखवाड़ा कार्यक्रमों के सफल और सुचारु आयोजन के लिए अलग अलग समितियों का गठन किया गया और उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं के संचालन का दायित्व सौंपा गया। हर पखवाड़ा वर्ष की तरह इस वर्ष भी एमटीएस संवर्ग के लिए अलग से निबंध और सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस वर्ष 'तकनीकी एवं प्रशासनिक विषयों पर पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण' नामक नई प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें करीब 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके अलावा हिंदी निबंध, हिंदी टंकण, हिंदी टिप्पण-मसौदा एवं अनुवाद लेखन, स्वरचित कविता पाठ, और गीत, लोकगीत, भजन, गज़ल गायन आदि प्रयोगिताओं का भी आयोजन किया गया।

पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन दिनांक 14 सितम्बर 2021 को कैंटिन हॉल में किया गया। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में डॉ. स्वाती चढ़ढा, राजभाषा निदेशक, सीएसआईआर-एनसीएल कार्यालय, पाषाण, पुणे उपस्थित रही। कार्यक्रम का सूत्र संचालन सुश्री मोनिका संगवाहिया, वैज्ञानिक सहायक और मनोज कुमार, वैज्ञानिक सहायक ने किया। कार्यालय के कार्यभारी प्रमुख श्री के.एस.होसालीकर महोदय ने अध्यक्षता की तथा समिति के उपाध्यक्ष डॉ. अनुपम काश्यपि जी ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर गायन और कविता के पहले तीन प्रतिभागियों को उनकी प्रस्तुतियां प्रस्तुत करने का मौका दिया गया। मुख्य अतिथि महोदय जी ने अपने भाषण में कार्यालय में हिंदी में कार्य कितना आसान है, उसे करने के लिए केवल मन में इच्छा की जरूरत है, उन्होंने आसान तरीके से हिंदी में कार्य करने के लिए सभी का मार्गदर्शन किया। उन्होंने अपनी एक स्वरचित कविता भी सभी को सुनाई। कार्यालय के कार्यभारी प्रमुख श्री के.एस.होसालीकर महोदय जी ने अपने भाषण में यह बताया कि सभी समूह प्रमुखों का दायित्व है कि वे कार्यालयीन कार्य में हिंदी को बढ़ावा दें। सभी अधिकारियों ने यदि यह तय कर लिया कि हिंदी में प्रस्तुत टिप्पणी और मसौदों पर ही वे हस्ताक्षर करेंगे तो हिंदी के कार्य में होने वाली वृद्धि को कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने हिंदी का महत्व बताया। उन्होंने भी अपनी एक स्वरचित हिंदी कविता सुनाई।

समापन समारोह में ही कार्यालय की गृह पत्रिका “किरणे” के आठवें संस्करण का विमोचन मुख्य अतिथि एवं कार्यालय प्रमुख के कर कमलों से किया गया। इस पत्रिका में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा वैज्ञानिक/भाषा/सामान्य विषयों पर लिखी गई स्वरचित रचनाएं प्रकाशित की गई हैं।

अंत में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। श्रीमती अपर्णा खेडकर और प्रमोद पारखे ने सभी को धन्यवाद दिया। समापन समारोह कार्यक्रम तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं में कोविड 19 के सभी दिशा-निर्देशों का पालन किया गया।

पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त कार्मिकों की सूची।

1. निबंध प्रतियोगिता

- (क) एम.टी.एस संवर्ग के लिए
प्रथम - श्री एस.बी.खांदवे
द्वितीय - श्री ए.जे.दास
तृतीय - श्रीमती पूजा परदेशी
(ख) अन्य सभी संवर्गों के लिए
प्रथम - श्री जे.पी.साबले, मौवि - ए
द्वितीय - श्री हिमांशु पटेल, उ.श्रे.लि.
तृतीय - सुश्री निता वानखेडे, वै.सहा.

2. सरल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

- (क) एम.टी.एस संवर्ग के लिए
प्रथम - श्री एस.वी.शिंदे
द्वितीय - श्रीमती आर.ए.तलेकर
तृतीय - श्री पी.के.फलके
(ख) अन्य सभी संवर्गों के लिए
प्रथम - सुश्री निता वानखेडे, वै.सहा.
द्वितीय - सुश्री प्रियंका झा, वै.सहा.
तृतीय - श्रीमती स्वाती देउसकर, ग्रंथपाल और सूचना सहायक

3. हिंदी टिप्पण-मसौदा, अनुवाद प्रतियोगिता

- प्रथम - श्री बी.पी. भिवापुरकर, सहायक
द्वितीय - श्रीमती सुनिता गायकवाड, सहायक
तृतीय - श्रीमती स्मीता जोशी, मौ.वि. - बी

4. गीत/लोकगीत/गज़ल/भजन गायन प्रतियोगिता

प्रथम - श्री विजय दर्शिले, मैकेनिक ग्रेड ।

द्वितीय - सुश्री अर्पण चौधरी, वै.सहा.

तृतीय - डॉ. (श्रीमती) दिव्या सुरेन्द्रन, वैज्ञा. - सी

5. प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता

प्रथम - सुश्री अर्पण चौधरी, वै.सहा.

द्वितीय -श्री सी.टी.काले, एसआरएफ

तृतीय - सुश्री नेहा, वै.सहा.

6. स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता

प्रथम - सुश्री आशा लटवाल, वैज्ञा. सी

द्वितीय -श्री मनोज कुमार, वै.सहा.

तृतीय - सुश्री नेहा, वै.सहा.

7. हिंदी टंकण प्रतियोगिता

प्रथम - श्री एस.आर सकपाल, सहायक

द्वितीय - श्रीमती पी.पी.कुलकर्णी, सहायक

तृतीय - श्रीमती ए.एम.मोरे, नि.श्रे.लि.

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह कार्यक्रम 2021 के कुछ क्षणचित्र





आज़ादी का अमृत महोत्सव की रिपोर्ट

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा निर्धारित की गई अवधि यानी दिनांक 18 अक्टूबर से 24 अक्टूबर, 2021 तक “आज़ादी का अमृत महोत्सव” जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं कार्यालय, पुणे में मनाया गया।

“जन जन तक पृथ्वी विज्ञान जन जन की भागीदारी” इस स्लोगन को मद्दे नज़र रखकर सभी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यालय के मुख्य द्वार पर और कार्यालय के विभिन्न भवनों पर “आज़ादी का अमृत महोत्सव” के बैनर लगाए गए तथा पूरे आठ दिनों के कार्यक्रम की रूप रेखा सभी समूह प्रमुखों को मेल द्वारा भेजी गई।

कार्यक्रम का आरंभ दिनांक 18 अक्टूबर 2021 को कार्यालय के कॅन्टीन हॉल में पूवाहन 10.30 बजे हुआ, कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यालय प्रमुख डॉ शिवानंद पै, वैज्ञानिक - ‘जी’ ने की और प्रमुख अतिथि समाज सेविका श्रीमती रेणु गावसकर जी थी । कार्यक्रम में सभी समूह प्रमुख और समिति के सदस्य उपस्थित थे तथा ‘एकलव्य संस्था’ से आमंत्रित 5वीं से 8वीं कक्षा के 50 छात्रों के साथ दीपप्रज्वलन से कार्यक्रम आरंभ हुआ, इसके पश्चात अतिथि का स्वागत किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख के संबोधन के पश्चात अतिथि महोदया का भाषण हुआ ।

सभी छात्रों को कार्यालय में स्थित मॉड्युलर वेधशाला में रखे गए हायग्रोग्राफ, थर्मोग्राफ, स्वचालित वर्षामापी, टिपिंग बकेट वर्षामापी, स्वचालित ऑप्टिकल एनिमोमीटर, पवन दिशासूचक, ओपन पॅन इवेपोरिमीटर उल्लिखित सभी उपकरणों के कार्य करने के तरीके से अवगत कराया गया तथा भूकम्पलेखी एकक भी दिखाया गया ।

कार्यालय के ग्रंथालय को भेंट दी तथा कार्यालय के नवनियुक्त वैज्ञानिक सहायकों द्वारा तैयार किए गए बादलों के विभिन्न प्रकार तथा जल चक्र के मॉडेल को दिखाया गया। उसके पश्चात श्रीमती आरती बंडगर, वैज्ञानिक- ‘सी’द्वारा बच्चों को मराठी में मौसम की जानकारी दी गई। दोपहर में 1330 बजे के करीब बच्चों को दोपहर का भोजन कराकर पहले दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ । इस पहले दिन के कार्यक्रम के दौरान संस्था के बच्चों और कार्यालय के कुछ कर्मिकों द्वारा सांस्कृतिक (गीत गायन) प्रस्तुतियां भी प्रस्तुत की गई ।

दिनांक 20 अक्टूबर, 2021 को पुणे स्कूल अँड होम फॉर ब्लाइंडट्रस्ट के स्कूल को भेंट दी वहां पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया । स्कूल के व्यवस्थापक लेफ्टनंट विंग कमांडर कृष्णा शेवालेजी ने सभी का स्वागत किया और कार्यशाला आरंभ हुई कार्यशाला में सतह उपकरण विभाग के प्रमुख श्री के.एस. होसालीकर वैज्ञानिक - ‘जी’ ने मौसम विभाग

किस तरह जन जन को अपनी सेवाएं देता हूँ इसकी जानकारी दी, इसके पश्चात आरती बंडगर, वैज्ञानिक 'सी' ने मौसम के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्री जोस सैम्युअल, मौसम विज्ञानी - 'ए' ने मौसम सेवाओं संबंधी जानकारी दी, श्रीमती अपर्णा खेडकर, कनिष्ठ अनुवादक अधिकारी ने मौसम विज्ञान कार्यालय, पुणे से संबंधित जानकारी दी। ब्लाइंड स्कूल में मौसम विज्ञान उपकरणों जैसे पवन दिशासूचक - जो हवा की दिशा दर्शाता है, एनिमोमीटर (कप काउंटर) जो एक पूर्ण चक्कर लगाकर औसत पवन गति दर्शाता है, वर्षामापी (साधारण) जिससे प्रत्येक तीन घंटों में सिलिंडर द्वारा वर्षा का मापन किया जाता है, तापमापी - शुष्क बल्ब, नम बल्ब, अधिकतम, न्यूनतम तापमान, आर्द्रता, ओस बिंदु आदि का मापन, एनेरॉयड बैरोमीटर, सन शाइन रिकॉर्डर जैसे उपकरणों का प्रदर्शन रखा गया और इन उपकरणों से लिये जाने वाले कार्यों को श्री उमेश कुलकर्णी मौ.वि 'ए', श्रीमती शहनाज़ मुल्ला, मौ.वि.-ए तथा श्री आचिंत्य जासवाल, वै.सहा. ने सभी उपस्थित ब्लाइंड स्कूल कर्मचारियों एवं छात्रों का समझाया।

दिनांक 21 और 22 अक्टूबर, 2021 को लगातार मॉडर्न स्कूल के पहले दिन 50 छात्रों और दूसरे दिन 70 छात्रों ने वेधशाला को भेंट दी और ऊपर उल्लिखित सभी उपकरणों के कार्य करने के तरीके से उन्हें अवगत कराया गया। साथ ही हेयर हायग्रोग्राफ, थर्मोग्राफ, स्वचालित वर्षामापी, टिपिंग बकेट वर्षामापी, स्वचालित ऑप्टिकल एनिमोमीटर, पवन दिशासूचक, ओपन पैन इवेपोरिमीटर तथा भूकम्पलेखी दिखाया गया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर दिनांक 22.10.2021 को मॉडर्न हाइस्कूल पुणे से विद्यार्थियों ने वायु प्रदूषण अनुभाग को भेंट दी। इस अवसर पर विद्यार्थियों को वर्णलेखन (क्रोमैटोग्राफी) और परमाण्विक अवशोषण स्पेक्ट्रम प्रकाशमापी (एटॉमिक एबज़ॉर्बेशन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर) के उपयोग द्वारा ऋणायन और धनायन (एनियन एण्ड कटियन) के लिए वर्षा जल विश्लेषण के बारे में बताया गया। उन्हें कुल निलंबित कणिकीय पदार्थ (TSP, PM10, PM 2.5) की नई परियोजना के बारे में भी समझाया गया। परमाणु अवशोषण स्पेक्ट्रोफोटोमीटर (फ्लेम नमूना और विभिन्न धातुओं Mg(मैगनेशियम), Na(सोडियम), K(पोटेशियम), Cd (कैडियम), Cu(तांबा), Fe(लोहा), Pb(सीसा) के लिए इसके विश्लेषण का उपयोग करके टीएसपीएम का संग्रह।

दिनांक 21 को डॉ. मेधा खोले, वैज्ञानिक - 'एफ' ने छात्रों को मौसम की जानकारी दी और ग्लोबल वार्मिंग का किस तरह पर्यावरण पर परिणाम होता है, हमारा मौसम पूर्वानुमान कैसे सटीक होता है यह उन्होंने समझाया। दिनांक 22 को सतह उपकरण विभाग के प्रमुख श्री के.एस. होसालीकर वैज्ञानिक 'जी' ने मौसम विभाग किस तरह जन जन को अपनी सेवाएं देता हूँ यह समझाते हुए छात्रों को प्रेरणादायी व्याख्यान दिया।

'ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (GKMS) के अंतर्गत प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर जागरूकता कार्यक्रम' ऑनलाइन कार्यक्रम दिनांक 21 अक्टूबर, 2021

आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रमों की श्रंखला में भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) पुणे द्वारा दिनांक 21 अक्टूबर 2021 को 'ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (GKMS) के अंतर्गत प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर जागरूकता कार्यक्रम' भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) एवं विभिन्न कृषि विद्यापीठों के सहयोग से आयोजित किया गया।

डॉ. कृपाण घोष, प्रमुख, कृषि मौसम विज्ञान विभाग पुणे ने सभी प्रतिभागियों का जागरूकता कार्यक्रम में स्वागत करते हुए GKMS परियोजना की उत्पत्ति एवं महत्त्व को रेखांकित किया। साथ ही महाराष्ट्र में GKMS के नेटवर्क, कृषि के लिए मौसम पूर्वानुमान तथा सलाहकार बुलेटिन के बारे में भी बताया।

तदुपरांत डॉ. लाखन सिंह, संचालक ICAR, अटारी पुणे ने GKMS परियोजना के अंतर्गत हो रहे कार्यों और अनुभवों को साझा किया। डॉ. डी. एस. पै, प्रमुख, जलवायु अनुसंधान और सेवाएं, IMD पुणे ने मौसम पूर्वानुमान में सुधार के माध्यम से कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में हो रही तरक्की तथा भविष्य के रोडमैप के बारे में चर्चा की और अपने उत्पादों और सेवाओं को और उन्नत बनाने के लिए सतत संवाद की महत्ता पर जोर दिया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. आर. बालसुबरामण्यन, वैज्ञानिक ई द्वारा किया गया।

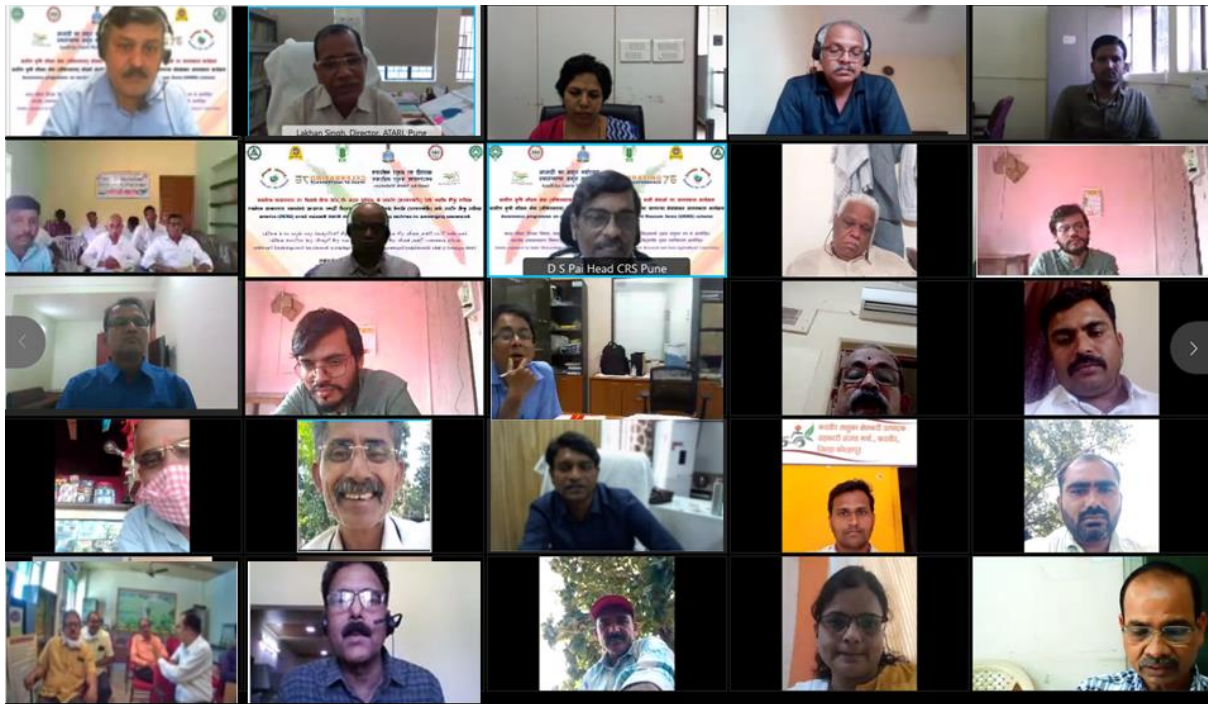
तकनीकी सत्र के अंतर्गत प्रथम व्याख्यान श्री. उदय शेंडे, वैज्ञानिक ई द्वारा दिया गया जिन्होंने महाराष्ट्र राज्य के IMD वेधशाला नेटवर्क से किसानों को अवगत कराया।

तत्पश्चात डॉ. अनुपम कश्यपी, प्रमुख मौसम पूर्वानुमान विभाग ने मौसम की प्रागुक्ति और कृषि में इसके अनुप्रयोगों पर चर्चा की। डॉ. के. के. डाखोरे, प्रमुख नोडल अधिकारी, परभणी ने मौसम पूर्वानुमान की कृषि में आवश्यकता और उपयोगिता, किसानों के लिए IMD द्वारा तैयार किये जा रहे विभिन्न उत्पाद और मौसम आधारित कृषि सलाह सेवा के बारे में विस्तृत चर्चा की। इसके बाद महाराष्ट्र के अन्य तीन कृषि विश्वविद्यालयों के प्रधान नोडल अधिकारियों डॉ. व्ही. जी. मोरे, डॉ. व्ही. ए. स्थूल एवं डॉ. ए. पी. करुणाकर ने जीकेएमएस योजना के संबंध में अपने स्वयं के अनुभवों के साथ-साथ अपने संबंधित क्षेत्रों की कृषि जलवायु परिस्थितियों के बारे में चर्चा की।

इसके उपरान्त महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों से जुड़े हुए किसानों के प्रश्नों के उत्तर IMD, DAMU, और AMFU के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों द्वारा प्रदान किये गए। साथ ही GKMS के अंतर्गत मिल रही सेवाओं के बारे में उनकी राय भी ली गई। अधिकांश किसानों

ने उनको प्रदान की जा रही सेवाओं पर प्रसन्नता व्यक्त की, साथ ही इन किसानों द्वारा इस प्रकार के और भी कार्यक्रम कराने की आवश्यकता व्यक्त की गई ।

जागरूकता कार्यक्रम में महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के 225 किसानों सहित कुल 275 प्रतिभागियों ने भाग लिया । अंत में सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया ।



Webex Meeting Info

sanjay Tukaram Chaudhari

Gulab Ukey Tantamukti Adeks...

75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

आजादी का अमृत महोत्सव
स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव
Azadi ka Amrit Mahotsav

CELEBRATING 75 INDEPENDENCE

Iconic Week
October 18 - 24, 2023

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) को बढ़ावा देने वाली सेवाओं पर जागरूकता कार्यक्रम
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) को बढ़ावा देने वाली सेवाओं पर जागरूकता कार्यक्रम
Awareness programme on services provided by Gramin Kheti Mausam Sewa (GKMS) scheme

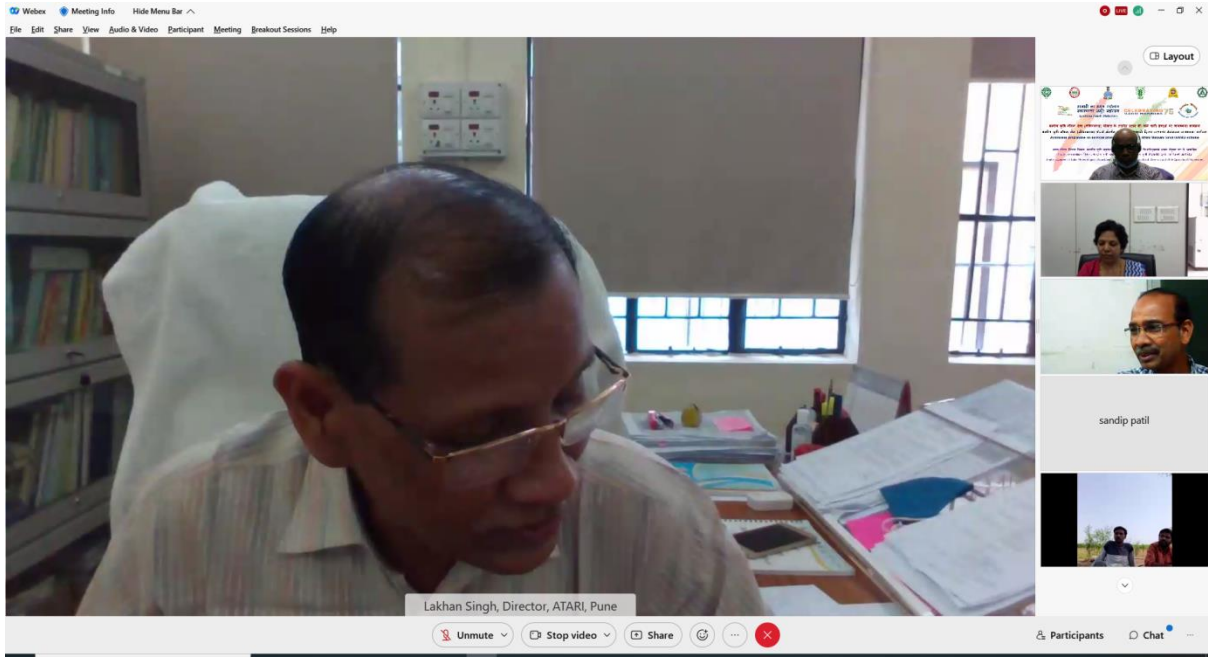
भारत मौसम विज्ञान विभाग, भारत
भारतीय हवामानशास्त्र विभाग, भारत
Jointly organised by India Meteorological Department and Agricultural Research and State Agricultural Universities

विद्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित
विद्यापीठों द्वारा एकत्रितपणे आयोजित

D S Pai Head CRS Pune

Unmute Stop video Share

Participants Chat



दिनांक 22 .10.2021 को आकाशवाणी पुणे में श्री एस.डी. सानप वैज्ञानिक 'सी' ने साक्षात्कार दिया, उन्होंने "मौसम की सेवाएँ" जन जन को किस तरह प्रदान की जाती है, इसकी जानकारी दी ।

दिनांक 22.10.2021 को कार्यालय के कार्मिकों के बच्चों के लिए सामान्य ज्ञान और ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन एम टी आय पाषाण, पुणे में किया गया । इस कार्यक्रम के

दौरान मौसम प्रशिक्षण संस्थान के प्रमुख ने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता और ड्राइंग प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों का स्वागत किया । इस संबोधन में उन्होंने समाज के प्रति आईएमडी के योगदान के महत्व के बारे में बताया । इसके अलावा उन्होंने आईएमडी के जनादेश अर्थात विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मौसम विज्ञान और जलविज्ञान सेवाओं द्वारा देश भर में नियमित प्रेक्षण लेना, विशिष्ट घंटों पर मौसम चार्टों पर प्रेक्षणों का प्लॉटिंग करना, स्टेशन का जलवायु विज्ञान तैयार करना और विभिन्न हितधारकों और अंतिम उपयोगकर्ताओं को मौसम जलवायु सेवाएं प्रदान करने पर जोर दिया ।

सीआर एंड एस/CRS, आईएमडी/IMD पुणे द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव सप्ताह' में भाग लिया गया, जिसमें वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं, जनता और नीति निर्माताओं के बीच, कृषि और भूमि उपयोग, सिंचाई और बिजली विकास, समुद्र और वायु के नौसंचालन (नेविगेशन), इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य आदि जैसे विभिन्न रचनात्मक मानव गतिविधियों के लिए, मौसम विज्ञान और संबद्ध विज्ञान के ज्ञान और उसके अनुप्रयोग के प्रसार की प्रतिबद्धता, प्रदर्शन मंजूषा द्वारा किया गया ।

सीआर एंड एस/CRS, आईएमडी/IMD पुणे ने मौसम उपकरणों, मौसम सेवाओं की जानकारी, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और विशेष रूप से स्कूल /कॉलेज के छात्रों और आम जनता के लिए मौसम और जलवायु से संबंधित सामान्य विषयों पर ऑनलाइन व्याख्यान और चर्चा का आयोजन करके इस महोत्सव को मनाया है ।

व्याख्यानों का विवरण नीचे दिया गया है:

दिन 1:

दिनांक: 23 अक्टूबर, 2021

यूट्यूब लिंक: <https://youtu.be/247GHLJKYA>

व्याख्यान 1:

शीर्षक: आईएमडी की मौसम सेवाएं, पूर्व चेतावनी प्रणाली और प्रभाव आधारित पूर्वानुमान

नाम: डॉ अनुपम कश्यपी, वैज्ञानिक-एफ और प्रमुख, मौसम पूर्वानुमान प्रभाग, सीआर एंड एस, आईएमडी, पुणे।

समय: सुबह 11.30 बजे (आईएसटी)

व्याख्यान २:

शीर्षक: कृषि के लिए मौसम आधारित फसल सलाह

नाम: डॉ आशुतोष मिश्रा, वैज्ञानिक-डी, एग्रोमेट डिवीजन, सीआर एंड एस, आईएमडी, पुणे।

समय: दोपहर 12 बजे (आईएसटी)

दूसरा दिन:

दिनांक: 24 अक्टूबर, 2021

यूट्यूब लिंक: <https://youtu.be/PEkxGcCiepk>

व्याख्यान 3:

शीर्षक: आईएमडी की प्रेक्षण प्रणाली और विभिन्न मौसम मापदंडों का मापन

नाम: श्री के.एस. होसलीकर, वैज्ञानिक-जी और प्रमुख, सतह उपकरण प्रभाग, सीआर एंड एस, आईएमडी, पुणे।

समय: सुबह 11.30 बजे (आईएसटी)

व्याख्यान 4:

शीर्षक: जलवायु परिवर्तन की मूल बातें

नाम: डॉ. डी.एस. पाई, वैज्ञानिक-जी और प्रमुख, जलवायु अनुसंधान और सेवाएं (सीआर एंड एस), आईएमडी, पुणे।

समय: दोपहर 12.00 बजे (आईएसटी)

सुश्री आरती बंडगर, वैज्ञानिक - सी और श्री रंजन फुकन, वैज्ञानिक-सी ने इन दो दिवसीय व्याख्यान श्रृंखला के लिए क्रमशः एंकर और आईटी समर्थन के रूप में काम किया है।

इस सीरीज को दर्शकों का काफी अच्छा रिस्पोंस मिला था। पहले दिन की ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला को लगभग 343 बार देखा गया और दूसरे दिन लगभग 194 बार देखा गया। विस्तृत विवरण के लिए स्क्रीन शॉट संलग्न है।

पुणे के कार्यालय द्वारा विविध माध्यमों से कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और “जन जन तक पृथ्वी विज्ञान जन जन की भागीदारी” का प्रसार और प्रचार किया गया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के कुछ के कुछ क्षणचित्र

